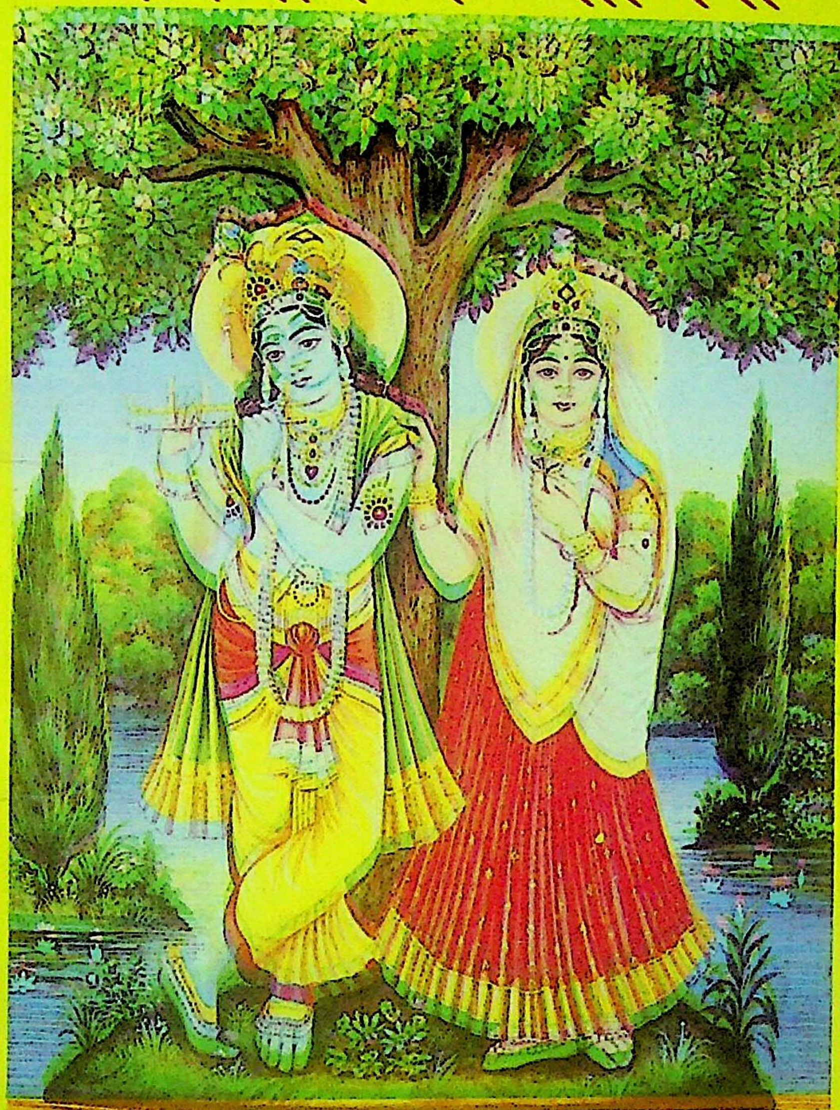
॥ श्रीहरिः ॥

526 ▲

महाभाव-कल्लोलिनी



गीताप्रेस, गोरखपुर

526

॥ श्रीहरिः ॥

महाभाव-कल्लोलिनी



सम्पादक—हनुमानप्रसाद पोद्दार

प्रकाशक—गोबिन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०४७ प्रथम संस्करण ६,०००
सं० २०५८ द्वितीय संस्करण ५,०००
योग ११,०००

मूल्य—पाँच रुपये

मुद्रक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
फोन : (०५५१) ३३४७२१ ; फैक्स ३३६९९७

visit us at: www.gitapress.org | e-mail: gitapres@ndf.vsnl.net.in

श्रीराधा

नम्र निवेदन

भगवती श्रीराधाजीका प्राकट्य-महोत्सव नयी वस्तु नहीं है। पिछले पाँच हजार वर्ष पूर्व जबसे उनका धराधामपर अवतार हुआ, तभीसे प्रतिवर्ष महोत्सव मनाया जाता है। शास्त्रोंमें यह स्पष्ट आज्ञा है। पुराणोंमें पद्मपुराण अत्यन्त प्राचीन है। उसमें स्पष्ट शब्दोंमें प्रतिवर्ष महोत्सव मनानेका आदेश है तथा उसका महान् फल बतलाया गया है—

प्रत्यब्दमेव कुरुते राधाजन्ममहोत्सवम्।

(पद्मपुराण, उत्तर०, अ० १६३)

'प्रतिवर्ष राधाजन्म-महोत्सव करना चाहिये।'

अवश्य ही श्रीराधाजीका लीला-सम्बन्ध लौकिक लीलासे कम रहा और भगवान्‌की ह्लादिनी आनन्दरूपा निजशक्ति होनेके कारण उनके आनन्द-विधानसे ही विशेष सम्बन्ध रहा; अतः भगवान् श्रीकृष्णकी जैसे विभिन्न रूपों तथा भावोंसे सर्वत्र पूजा-उपासना हुई, उनका प्राकट्य-महोत्सव जैसे सर्वत्र मनाया जाने लगा, वैसा श्रीराधाजीका स्वाभाविक ही नहीं मनाया गया। परंतु भगवत्-प्रेमके उच्चतम साधन-राज्यमें तो श्रीराधाजीके दिव्य आदर्शको सामने रखनेकी परम अनिवार्य आवश्यकता है ही; विश्व-जगत्‌के मानव-प्राणीके लिये भी पारस्परिक प्रेमकी वृद्धिके हेतु जिस त्यागकी आवश्यकता है और जिसके बिना प्रेम एक केवल मोहका पर्यायवाची बना रहता है, वह त्याग राधाजीके परम त्यागमय जीवनको भी आदर्श मानकर चलनेसे शीघ्र सिद्ध हो सकता है। इसके लिये श्रीराधाजीके दिव्य प्रेमका, दिव्य भावोंका, उनके महान् त्यागका, उनकी दिव्य जीवनचर्याका और उनके स्वरूप-तत्त्वका स्मरण परम आवश्यक है, और इसी महान् उद्देश्यको लेकर प्राचीन परम्परागत राधा-जन्म-महोत्सवको देशभरमें व्यापक-रूपसे मनाये जाने, उनकी महान् शिक्षाका प्रचार-प्रसार करके उसके द्वारा क्षुद्र 'स्व'की सेवामें लगे हुए पशुता तथा असुरताकी ओर जाते हुए अधोगामी मनुष्यको ऊपर

उठाकर उसको वास्तविक मानव बनाने तथा साधनाके उच्च स्तरपर पहुँचानेके लिये यह आयोजन किया जा रहा है। भगवान् श्रीराधामाधवकी कृपासे इस आयोजनमें उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त हो रही है। उत्सवोंकी व्यापकता बढ़ रही है और साथ ही श्रीराधा तथा श्रीगोपाङ्गनाओंके सम्बन्धमें फैले हुए मोहजनित दुर्भावोंका नाश होकर उनके परमोच्च दिव्य जीवनकी भी झाँकी कहीं-कहीं होने लगी है। यह बड़ा शुभ लक्षण है।

श्रीराधाजीके सम्बन्धमें बड़ा भ्रम फैला हुआ था और लोग उन्हें भोगजगत्‌की ही कल्पना मानने लगे थे। वास्तवमें श्रीराधाजीके जीवनका दिव्य स्वरूप अत्यन्त पवित्र तथा परम पावन है। हमारे भाईजीके मनने श्रीराधाजीके जिस स्वरूपको देख पाया है, उसकी बड़ी स्थूल तथा संक्षिप्त झाँकी वे इन शब्दोंमें कराया करते हैं—

मेरी उन राधाके शुचितम प्रेमराज्यमें नहीं प्रवेश।
काम-भोगका मलिन, कभी भी किंचित् नहीं कल्पना-लेश॥
रागरहित श्रृंगार अनूठा, मोहरहित है पावन प्रेम।
सुख-वाञ्छा-विरहित ममता है, पूर्ण समर्पित योग-क्षेम॥
स्वादरहित सब खान-पान है, है अभिमानरहित अति मान।
भोग-बहुलता भोगरहित नित, प्रियतम-सुखकी शुचितम खान॥
इन्द्रिय-तन-मन-प्राण-अहं-मति हैं प्रियतमके लिये तमाम।
नहीं कार्य कुछ निजका उनसे, करते सब प्रियतमका काम॥
संयमपूर्ण सहज ही होते जगमें, जगके सब व्यवहार।
नहीं किसीसे उनका मतलब, प्रियतम सुख ही केवल सार॥
मेरी ऐसी हैं वे राधा त्रिभुवन-पावनि जीवनसाध्य।
नित्य-तृप्त, श्रीमाधवकी जो हैं पवित्रतम परमाराध्य॥

'मेरी उन श्रीराधाके पवित्रतम प्रेमराज्यमें मलिन काम-भोगका किसी कालमें किंचित् भी प्रवेश तो है ही नहीं, उसकी लेशमात्र कल्पना भी नहीं है। उनमें (केवल प्रियतम श्रीकृष्णके सुखके हेतु) रागरहित शृङ्गार है, मोहरहित सबको पवित्र करनेवाला प्रेम है, निज-सुख-इच्छासे सर्वथा रहित ममता है और योगक्षेम तो पूर्ण समर्पित है। (प्रियतमका योगक्षेम ही राधाका योगक्षेम है), स्वादरहित सब खान-पान है, अभिमानसे रहित (प्रियतम-सुखदायी) अति मान है।

अपने भोगकी इच्छासे रहित केवल नित्य प्रियतमकी सुख-सेवाके लिये भोगबाहुल्य है—यानी वे प्रियतमके पवित्र सुखकी ही खान हैं। राधाके इन्द्रिय, शरीर, मन, प्राण, बुद्धि, अहंकार सब केवल प्रियतमकी सेवाके लिये ही है। उनसे इनका अपना कोई काम नहीं है। ये सब सदा प्रियतमका ही कार्य करते रहते हैं। इन राधाजीके जगत्‌में जगत्‌के सारे व्यवहार सहज ही संयमपूर्ण होते हैं, किसी अन्यसे उनका कोई मतलब ही नहीं है। प्रियतमका सुख ही एकमात्र सार वस्तु है। मेरी वे जीवनकी साध्यस्वरूपा त्रिभुवन-पावनी श्रीराधा इस प्रकारकी गुण-स्वरूपवाली हैं, जो नित्य तृप्त हैं और श्रीमाधवकी पवित्रतम परमाराध्य हैं।'

श्रीराधाजीके इस संक्षिप्त स्वरूपका विस्तार करके देखिये—वह कितना विशाल, कितना महान्, कितना पवित्रतम, कितना पावन, कितना उच्चतम साधनका आदर्श और कितना लोककल्याणकारी है। श्रीराधा-माधवकी कृपासे हमलोग उनके जीवनके यथार्थ स्वरूपकी किंचित्-सी दिव्य झाँकी प्राप्त कर सकें—यही उनके श्रीचरणोंमें प्रार्थना है और इसीलिये यह महोत्सव मनाया जा रहा है।

महोत्सवकी मधुरता तथा श्रीराधाजीकी पवित्र स्मृतिके लिये इस पद-पुस्तिकामें कुछ पदोंका संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। इनमें अधिकांश नवीन हैं, कुछ प्राचीन भी हैं। इनमें कुछ पद ऐसे भी हैं, जिनका जन्म-महोत्सवके अवसरपर ही नहीं, अन्य समय भी गान-कीर्तन किया जा सकता है। हमारी विनीत प्रार्थना है—सब लोग श्रीराधाजीकी पवित्रतम जीवन-झाँकी प्राप्त करनेके लिये सदा वार्षिक महोत्सव मनावें और इन पदोंका गान-कीर्तन करके जीवनका परम लाभ प्राप्त करनेमें सचेष्ट हों।

निवेदक—

चिम्मनलाल गोस्वामी



श्रीराधा-कृष्णका चित्र



श्रीराधा

पद-सूची

पद-संख्या पदोंकी प्रथम पंक्ति पृष्ठ-संख्या





श्रीराधामाधव-चरन बंदौं बारंबार

वन्दना एवं प्रार्थना

[१]

(राग टोड़ी—तीन ताल)

बंदौं राधा-पद-रज पावन।
स्याम-सुसेवित, परम पुन्यमय, त्रिबिध ताप बिनसावन ॥
अनुपम परम अपरिमित महिमा सुर-मुनि-मन तरसावन।
सर्बाकर्षक रसिक कृष्णघन दुर्लभ सहज मिलावन ॥

[२]

(दोहा)

मन्मथ-मन्मथ मन मथत जाके सुषमित अंग।
मुख-पंकज-मकरंद नित पियत स्याम दृग भृंग ॥ १ ॥
जाके अंग सुगंध कौं नित नासा ललचात।
तन चाहत नित परसिबौ जाकौ मधुमय गात ॥ २ ॥
मधु-रसमयि बचनावली सुनिबे कौं नित कान।
हरि के लालाइत रहत, तजि गुरुता कौ भान ॥ ३ ॥
जाके मधुर प्रसाद कौ मधु रस चाखन हेतु।
हरि-रसना अकुलात अति तजि दुस्त्यज श्रुति-सेतु ॥ ४ ॥
जाकी नख-दुति लखि लजत कोटि-कोटि रबि-चंद।
बंदौं तिन राधा-चरन-पंकज सुचि सुखकंद ॥ ५ ॥

[३]

(दोहा)

श्रीराधारानी-चरन बंदौं बारंबार।
जिन के कृपा कटाच्छ तैं रीझैं नंदकुमार॥
जिनके पद-रज-परस तें स्याम होयँ बेभान।
बंदौं तिन पद-रज-कननि मधुर रसनि के खान॥
जिन के दरसन हेतु नित बिकल रहत घनस्याम।
तिन चरनन मैं बसै मन मेरौ आठौं जाम॥
जिन पद पंकज पै मधुप मोहन दृग मँड़रात।
तिन की नित झाँकी करन मेरौ मन ललचात॥
'रा' अच्छर कौं सुनत हीं मोहन होत बिभोर।
बसै निरंतर नाम सो 'राधा' नित मन मोर॥

× × × ×

दो०—बंदौं श्रीराधाचरन पावन परम उदार।
भय-बिषाद-अग्यान हर प्रेमभक्ति-दातार॥

[४]

(दोहा)

श्रीराधारानी चरन बिनवौं बारंबार।
बिषय-बासना नास करि, करौ प्रेम-संचार॥
तुम्हरी अनुकंपा अमित, अबिरत, अकल, अपार।
मोपर सदा अहैतुकी बरसत रहत उदार॥
अनुभव करवावौ तुरत, जातें मिटें बिकार।
रीझैं परमानंदघन मो पै नंदकुमार॥
पर्‍यौ रहौं नित चरन-तल, अर्‍यौ प्रेम-दरबार।
प्रेम मिलै मोय दुहुन के पद-कमलनि सुखसार॥

[५]

(राग परज—ताल कहरवा)

जिनका शुचि सौन्दर्य-सुधा-रस-निधि नित नव बढ़ता रहता।

जिनका मधु माधुर्य माधुरी नित नवसे भरता रहता ॥
नित नवीन निरुपम भावोंका जिसमें सदा उदय होता।
जिसमें अतुल तरंगें नित नव उठतीं, नहीं विराम होता ॥
जिसमें अवगाहन कर कभी न होते तृप्त स्वयं भगवान।
रसमय स्वयं सदा जिसका रस करते लोलुपकी ज्यों पान ॥
जिनको निज स्वरूप-सद्गुण आनँदका कभी न होता भान।
शुचि सुन्दरता, मधुर माधुरीका होता न तनिक अभिमान ॥
जो अपनेको सदा समझतीं सभी भाँतिसे दीन-मलीन।
देती रहतीं नित्य मानतीं पर लेनेवाली अति हीन ॥
ऐसी जो प्रियतमा श्यामकी त्यागमूर्ति गुणवती उदार।
उन श्रीराधापदकमलोंमें नमस्कार है बारंबार ॥

[६]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

जिन लक्ष्मीकी रूप-माधुरी, जिनका मधुर शील-सौजन्य।
मधुर स्वभाव जनित जिनकी शुचि लीला प्रीति-माधुरी धन्य ॥
जो वैकुण्ठाधीश्वर-वक्ष-विहारिणि नित प्रेमार्णव मग्न।
जिनकी सेवा-अर्चामें नित रहते सुर-मुनिगण संलग्न ॥
राधाकी समता न कर सके उन लक्ष्मीजीके गुण-रूप।
वे राधा निज चरण-कमल-रज परम, मुझे दें दान अनूप ॥

[७]

(राग जंगला—ताल कहरवा)

निज-सुख-काम-गन्धका जिनमें किंचित् भी न कल्पना लेश।
प्रेम-दिनेश प्रकट रहता नित, मिटा काम-तम, रहा न शेष ॥
जिनके कर्म विचार सभीमें सदा एक प्रियतम-सुख-भाव।
सुखमय प्रिय-मुख दर्शनका नित नया नया उठता मन चाव ॥
ऐसी कृष्ण-सुखैक-स्वरूपा कृष्ण-मानसा प्रेमागार।
चरणकमलमें मुझे स्थान दें, करें कृपा-रस-वृष्टि अपार ॥

[८]

(राग लावनी तर्ज—ताल कहरवा)



श्री 'ललिता' लावण्य ललित सखि
गोरोचन-आभा युत अङ्ग ।
बिद्युद्-वर्णि निकुञ्ज-निवासिनि,
वसन रुचिर शिखिपिच्छ सुरङ्ग ॥
इन्द्रजाल-निपुणा, नित करती
परम स्वादु ताम्बूल प्रदान ।
कुसुम-कला-कुशला, रचती कल
कुसुम-निकेतन कुसुम-वितान ॥



सखी 'विशाखा' विद्युत्-वर्णा
रहती बादल-वर्णा कुञ्ज ।
तारा-प्रभा सुवसन सुशोभित,
मन नित मग्न श्याम-पद-कञ्ज ॥
कर्पूरादि सुगन्ध-द्रव्य युत
लेपन करती सुन्दर अङ्ग ।
बूटे-बेल बनाती, रचती
चित्र विविध रुचि अँग-प्रत्यङ्ग ॥



'चित्रा' अङ्ग-कान्ति केसर-सी,
काँच-प्रभा-से वसन ललाम ।
कुञ्ज-रङ्ग किञ्जल्क कलित अति,
शोभामय सब अङ्ग सुठाम ॥
विविध विचित्र वसन-आभूषण-
से करती सुन्दर शृङ्गार ।
करती सांकेतिक अनेक
देशोंकी भाषाका व्यवहार ॥



सखी 'इन्दुलेखा' शुचि करती
शुभ्र-वर्ण शुभ कुञ्ज निवास।
अङ्ग-कान्ति हरताल सदृश रँग
दाड़िम कुसुम वसन सुखरास॥
करती नृत्य विचित्र भङ्गिमा
संयुत नित नूतन अभिराम।
गायन-विद्या-निपुणा, व्रजकी
ख्यात गोपसुन्दरी ललाम॥



'चम्पकलता' कान्ति चम्पा-सी,
कुञ्ज तपे सोनेके रङ्ग।
नीलकण्ठ-पक्षीके रँगके
रुचिर वसन धारे शुचि अङ्ग॥
चावभरे चित चँवर डुलाती
अविरत निज कर-कमल उदार।
द्यूत-पण्डिता, विविध कलाओं-
से करती सुन्दर शृङ्गार॥



सखी 'रङ्गदेवी' बसती अति
रुचिर निकुञ्ज, वर्ण जो श्याम।
कान्ति कमल-केसर-सी शोभित,
जवा कुसुम-रँग वसन ललाम॥
नित्य लगाती रुचि कर-चरणों-
में यावक अतिशय अभिराम।
आस्था अति त्यौहार-व्रतोंमें,
कला-कुशल शुचि शोभाधाम॥



सखी 'तुङ्गविद्या' अति शोभित
कान्ति चन्द्र, कुङ्कुम-सी देह।
वसन सुशोभित पीत वर्ण वर,
अरुण निकुञ्ज, भरी नव नेह॥
गीत-वाद्यसे सेवा करती
अतिशय सरस सदा अविराम।
नीति-नाट्य-गान्धर्व-शास्त्र-
निपुणा रस-आचार्या अभिराम॥



सखी 'सुदेवी' स्वर्ण-वर्ण-सी,
वसन सुशोभित मूँगा-रङ्ग।
कुञ्ज हरिद्रा-रङ्ग मनोहर
करती सकल वासना-भङ्ग॥
जल निर्मल पावन सुरभितसे
करती जो सेवा अभिराम।
ललित लाड़िलीकी जो करती
बेणी-रचना परम ललाम॥

(दोहा)

अष्ट सखी करतीं सदा सेवा परम अनन्य।
राधा-माधव-युगलकी, कर निज जीवन धन्य॥
इनके चरण सरोजमें बारंबार प्रणाम।
करुणा कर दें श्रीयुगल-पद-रज-रति अभिराम॥

[९]

(राग मालकोस—तीन ताल)

स्वामिनी हे वृषभानुदुलारि !
कृष्णप्रिया, कृष्णगतप्राणा, कृष्णा, कीर्तिकुमारि ॥
नित्य निकुंजेस्वरि, रासेस्वरि, रसमयि, रस-आधार ।
परम रसिक रसराजाकर्षिनि, उज्ज्वल-रस की धार ॥
हरिप्रिया अहलादिनि हरि-लीला-जीवन की मूल ।
मोहि बनाय राखु निसिदिन निज पावन पद की धूल ॥

[१०]

(राग पीलू—तीन ताल)

दयामयि स्वामिनि परम उदार ।
पद-किंकरि की किंकरि-किंकरि करौ मोय स्वीकार ॥
दूर करौं निकुंज-मग कंटक-कुस सब सदा बुहार ।
स्वच्छ करौं तव पगतरि पावन धूर-धार सब झार ॥
देखौं दूरहि तैं तव प्रियतम संग सुललित बिहार ।
नित्य निहारत रहौं, मिलै कछु सेवा की सनकार ॥
पद-सेवन कौ बढ़ै चाव नित काल अनंत अपार ।
अर्पित रहै सदा सेवा में अंग-अंग अनिवार ॥
कबहुँ न जगै दूसरी तृस्ना, कबहुँ न अन्य विचार ।
रहै न कितहूँ कछु 'मेरौपन', 'अहंकार' हो छार ॥
होयँ तुम्हारे मनके ही बस, मेरे सब ब्यौहार ।
बनौ रहै नित तुम्हरौ ही सुख मेरो प्रानाधार ॥

[११]

(राग धनाश्री—तीन ताल)

राधाजू हम पै आजु ढरौ !
निज, निज प्रीतम की पद-रज-रति हमैं प्रदान करौ ॥
बिषम बिषय-रस की सब आसा-ममता तुरत हरौ ।
भुक्ति-मुक्तिकी सकल कामना सत्वर नास करौ ॥

निज चाकर-चाकर-चाकर की सेवा दान करौ।
राखौ सदा निकुंज निभृत में, झाड़ूदार बरौ॥

[१२]

(दोहा)

स्यामस्वामिनी राधिके! करौ कृपा कौ दान।
सुनत रहैं मुरली मधुर, मधुमय बानी कान॥
पद-पंकज-मकरंद नित पियत रहैं दृग-भृंग।
करत रहैं सेवा परम सतत सकल सुचि अंग॥
रसना नित पाती रहै दुर्लभ भुक्त प्रसाद।
बानी नित लेती रहै नाम-गुननि-रस-स्वाद॥
लगौ रहै मन अनवरत तुम में आठौं जाम।
अन्य स्मृति सब लोप हों सुमिरत छबि अभिराम॥
बढ़त रहै नित पलहिं-पल दिव्य तुम्हारौ प्रेम।
सम होवैं सब छंद पुनि, बिसरैं जोगच्छेम॥
भुक्ति-मुक्ति की सुधि मिटै, उछलैं प्रेम-तरंग।
राधा-माधव सरस सुधि करै तुरत भव-भंग॥

[१३]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

हे राधे! हे श्याम-प्रियतमे! हम हैं अतिशय पामर दीन।
भोग-रागमय, काम-कलुषमय मन प्रपञ्च-रत, नित्य मलीन॥
शुचितम दिव्य तुम्हारा दुर्लभ यह चिन्मय, रसमय दरबार।
ऋषि-मुनि-ज्ञानी-योगीका भी नहीं यहाँ प्रवेश-अधिकार॥
फिर हम-जैसे पामर प्राणी कैसे इसमें करें प्रवेश।
मनके कुटिल, बनाये सुन्दर ऊपरसे प्रेमीका वेश॥
पर राधे! यह सुनो हमारी दैन्यभरी अति करुण पुकार।
पड़े एक कोनेमें जो हम देख सकें रसमय दरबार॥
अथवा जूती साफ करें, झाड़ू दें—सौंपो यह शुचि काम।

रजकणके लगते ही होंगे नाश हमारे पाप तमाम ॥
होगा दम्भ दूर फिर पाकर कृपा तुम्हारीका कण-लेश ।
जिससे हम भी हो जायेंगे रहने लायक तव पद-देश ॥
जैसे-तैसे हैं, पर स्वामिनि ! हैं हम सदा तुम्हारे दास ।
तुम्हीं दया कर दोष हरो, फिर दे दो निज पद-तलमें बास ॥
सहज दयामयि ! दीनवत्सला ! ऐसा करो स्नेहका दान ।
जीवन-मधुप धन्य हो जिससे कर पद-पङ्कज-मधुका पान ॥

[१४]

(दोहा)

श्रीराधा ! अब देहु मोहि तव पद-रज-अनुराग ।
जातें इह-पर-भोग में होय उदय बैराग ॥
मोच्छहु की माया मिटै, कटैं सकल भव भोग ।
तुम दोउन के चरन कौ बन्यौ रहै संजोग ॥
जो कछु तुम चाहौ, करौ राधा-माधव ! दोउ ।
तुम्हरे मन की सहज रुचि चाह जु मेरी होउ ॥
सेवा कौ कछु काम जो हो मेरे अनुहार ।
छोटौ-मोटौ बकसि मोहि करौ कृपा-बिस्तार ॥
पर्‌यौ रहौं नित चरन-तल, परसौं नित पद-धूल ।
पगदासी पौंछत रहौं अग-जग सगरौ भूल ॥

[१५]

(दोहा)

हे राधे रासेश्वरी ! रसकी पूर्ण निधान ।
हे महान महिमामयी ! अमित श्याम-सुख-खान ॥
पाप-ताप-हारिणि, हरणि सत्वर सभी अनर्थ ।
परम दिव्य रस दायिनी पञ्चम शुचि पुरुषार्थ ॥
यद्यपि हैं सब भाँति हम अति अयोग्य, अघबुद्धि ।
सहज कृपामयि ! कीजिये पामर जनकी शुद्धि ॥

अति उदार ! अब दीजिये हमको यह वरदान।
मिले मञ्जरीका हमें दासी-दासी-स्थान ॥

[१६]

(दोहा)

करौ कृपा, श्रीराधिका ! बिनवौं बारंबार।
बनी रहे स्मृति मधुर, शुचि, मङ्गलमय, सुखसार ॥
श्रद्धा नित बढ़ती रहै, बढ़ै नित्य विश्वास।
अर्पण हों अवशेष तब जीवनके सब श्वास ॥

[१७]

(श्लोक)

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ-
धन्यातिधन्यपवनेन कृतार्थमानी।
योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि
तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो दिशोऽपि ॥
ब्रह्मेश्वरादिसुदुरूहपदारविन्द
श्रीमत्परागपरमाद्भुतवैभवायाः।
सर्वार्थसाररसवर्षिकृपार्द्रदृष्टे-
स्तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ॥
यो ब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यै-
रालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तस्य।
सद्यो वशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिं
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥
आधाय मूर्द्धनि यमापुरुदारगोप्यः
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमौलेः।
भावोत्सवेन भजतां रसकामधेनुं
तं राधिकाचरणरेणुमहं स्मरामि ॥

वृन्दावनेश्वरि तवैव पदारविन्दं
प्रेमामृतैकमकरन्दरसौघपूर्णम्।
हृद्यर्पितं मधुपतेः स्मरतापमुग्रं
निर्वापयत्परमशीतलमाश्रयामि ॥



जय-गान

[१८]

(राग खमाच—ताल दादरा)

जयति जय राधा रसिक-मनि-मुकुट-मनहरनी त्रिये।
पराभक्ति-प्रदायनी करि कृपा करुनानिधि प्रिये॥
जयति गौरी नवकिसोरी सकल सुख सीमा त्रिये।
जयति रति-रस वर्धिनी अति अद्भुता सदया हिये॥
जयति आनँदकंदनी जगबंदनी बर-बरनिये।
जयति स्यामा अमित-नामा बेदबिधि निर्बाचिये॥
जयति रासबिलासिनी कल कला कोटि प्रकासिये।
जयति बिबिध विहार करनी रसिकबरनी सुभधिये॥
जयति चंचल चारुलोचनि दिव्य वस्त्राभरनिये।
जयति प्रेमा प्रेमसीमा कोकिला-कल-बैनिये॥
जयति कंचन-दिव्य-अंगी नवल नीरज-नैनिये।
जयति बल्लभ-बल्लभा आनंद कलभा तरुनिये॥
जयति नागरि गुन-उजागरि प्रानधन-मन-हरनिये।
जयति नौतम-नित्य-लीला नित्यधाम-निवासिये॥
जयति गुन-माधुर्य-भूपा सिद्धिरूपा सक्तिये।
जयति सुद्ध-सुभाव-सीला स्यामला सुकुमारिये॥
जयति जस जग प्रचुर परिकर (श्री) हरिप्रिया जीवन जिये॥

[१९]

(राग खमाच—ताल दादरा)

राधे राधे राधिके जय राधे राधे राधिके ।
राधे राधे राधिके श्रीराधे राधे राधिके ॥

कृष्ण कान्त मनोहरा; जय राधे० सर्वगुणगण-तत्परा । श्रीराधे०
कृष्ण मनमधुकरहिता; जय राधे० मालतीवन महकिता । श्रीराधे०
कृष्ण आँनददायिका; जय राधे० नित्य नौतम नायिका । श्रीराधे०
कृष्ण-सुखदा सागरी; जय राधे० अलित रूप उजागरी । श्रीराधे०
कृष्ण-चित्ताकर्षिनी; जय राधे० सदा रसघनवर्षिनी । श्रीराधे०
कृष्ण-पंकज-पोषिनी; जय राधे० समरहियदुखशोषिनी । श्रीराधे०
कृष्ण-हिय-सर हंसिनी; जय राधे० सकललोकप्रसंसिनी । श्रीराधे०
कृष्ण-तरुबर-बल्लरी; जय राधे० सदा अमृत-रस भरी । श्रीराधे०
कृष्ण मनमृग डोरिका; जय राधे० बसीकरन किसोरिका । श्रीराधे०
कृष्ण प्राणकपूरहित; जय राधे० महागुंजा मंजुलित । श्रीराधे०
कृष्ण अलिमन-रंजिनी; जय राधे० सहजसुरभित कंजनी । श्रीराधे०
कृष्ण चातक स्वातिकी; जय राधे० जीवजीवनि चातकी । श्रीराधे०
कृष्ण कनक सुहागिनी; जय राधे० हरिप्रिये बड़भागिनी । श्रीराधे०
कृष्ण-जलज-जलासय; जय राधे० अहर्निस आधारमय । श्रीराधे०
कृष्ण-रस-आस्वादिनी; जय राधे० उर सदा उन्मादिनी । श्रीराधे०
कृष्ण-संपति सर्बसा; जय राधे० प्रेयसी प्रियतम-बसा । श्रीराधे०
कृष्ण तन-घन दामिनी; जय राधे० हरिप्रिया श्रीस्वामिनी । श्रीराधे०

(२०)

(राग भैरव—ताल कहरवा)

बृंदावन-रानी श्रीराधा । मोहन-मन-मानी श्रीराधा ॥ १ ॥
जय नित्यबिहारिनी श्रीराधा । ब्रज-सुख बिस्तारिनि श्रीराधा ॥ २ ॥
कीरति की कन्या श्रीराधा । सब ही बिधि धन्या श्रीराधा ॥ ३ ॥
जय रासबिलासिनि श्रीराधा । नित कुंज निवासिनि श्रीराधा ॥ ४ ॥

हरि-उर-बनमाला श्रीराधा। गुन-रूप-रसाला श्रीराधा ॥ ५ ॥
श्रीदामा-अनुजा श्रीराधा। बृष-दिनमनि-तनुजा श्रीराधा ॥ ६ ॥
रसिकन की स्वामिनि श्रीराधा। करुनानिधि-नामिनि श्रीराधा ॥ ७ ॥
बंसीवट-बासिनि श्रीराधा। संगीत-प्रकासिनि श्रीराधा ॥ ८ ॥
श्रीकृष्ण-सिरोमनि श्रीराधा। जय स्याम सजीवनि श्रीराधा ॥ ९ ॥
आंनद-रसायिनि श्रीराधा। प्रीतम-सुखदायिनि श्रीराधा ॥ १० ॥
अनुराग-सुबेली श्रीराधा। सौभाग्य-नवेली श्रीराधा ॥ ११ ॥
सरसीरुह-लोचनि श्रीराधा। हरि-बिरह-बिमोचनि श्रीराधा ॥ १२ ॥
गोपाल-उपासिनि श्रीराधा। बृंदाबन-बासिनि श्रीराधा ॥ १३ ॥
श्रीगान-सुधानिधि श्रीराधा। प्रेमावधि सब बिधि श्रीराधा ॥ १४ ॥
जय नख चंद्रावलि श्रीराधा। प्रीतम-प्रेमावलि श्रीराधा ॥ १५ ॥
ललितादिक-प्यारी श्रीराधा। अतिरूप-उज्यारी श्रीराधा ॥ १६ ॥
मंगल की मूरति श्रीराधा। ब्रज-बन-सुख पूरति श्रीराधा ॥ १७ ॥
ब्रजचंद-कुमोदिनि श्रीराधा। भांडीर-बिनोदिनि श्रीराधा ॥ १८ ॥
लीला-रस-रंगिनि श्रीराधा। अनुराग-अनंगिनि श्रीराधा ॥ १९ ॥
त्रिभुवन-ठकुरायनि श्रीराधा। गोबिंद-गुसाँयनि श्रीराधा ॥ २० ॥
गोपी-जन-मंडिनि श्रीराधा। रस-रासि अखंडिनि श्रीराधा ॥ २१ ॥
नटनागर-भामा श्रीराधा। परिपूरन कामा श्रीराधा ॥ २२ ॥
तरुनी-मनि दच्छनि श्रीराधा। सब भाँति सुलच्छनि श्रीराधा ॥ २३ ॥
कल केलि तरंगिनि श्रीराधा। लावन्य-बिभंगिनि श्रीराधा ॥ २४ ॥
कात्यायनि-बंदिनि श्रीराधा। अभिलाष अमंदिनि श्रीराधा ॥ २५ ॥
गोपी-चूड़ामनि श्रीराधा। सुषमा-महिमा मनि श्रीराधा ॥ २६ ॥
रामा अभिरामा श्रीराधा। स्यामा सुखधामा श्रीराधा ॥ २७ ॥
रस-रास-रचावनि श्रीराधा। नटराज-नचावनि श्रीराधा ॥ २८ ॥
ब्रज-जीवन-जीवनि श्रीराधा। निरवधि रसपीवनि श्रीराधा ॥ २९ ॥
जमुना-जल-बिहरिनि श्रीराधा। लीलामृत-लहरिनि श्रीराधा ॥ ३० ॥
निगमादि-अगम्या श्रीराधा। प्रेमावधि रम्या श्रीराधा ॥ ३१ ॥

जग-बंदन-बंदित श्रीराधा। नँद-नंदन नंदित श्रीराधा ॥ ३२ ॥
निसि-जागर-साजित श्रीराधा। सुख-सेज-बिराजित श्रीराधा ॥ ३३ ॥
ब्रज-चंद-चकोरी श्रीराधा। बृषभान-किसोरी श्रीराधा ॥ ३४ ॥
ब्रज-मोहन-मोहिनि श्रीराधा। अभिलाषनि दोहिनि श्रीराधा ॥ ३५ ॥
बृंदाबन-सोभा श्रीराधा। क्रीड़ा-तरु-गोभा श्रीराधा ॥ ३६ ॥
अतिसय रति-रूपिनि श्रीराधा। माधुर्य अनूपिनि श्रीराधा ॥ ३७ ॥
कमनीय कुमारी श्रीराधा। हरिबल्लभ-प्यारी श्रीराधा ॥ ३८ ॥
श्रीकृष्णाकर्षिनि श्रीराधा। आनँद घन बर्षिनि श्रीराधा ॥ ३९ ॥
दिव्यांसुक-बेसी श्रीराधा। अति-मंजुल-केसी श्रीराधा ॥ ४० ॥
अभिसार-प्रपन्ना श्रीराधा। अत्यन्त प्रसन्ना श्रीराधा ॥ ४१ ॥
कल-केलि-परावधि श्रीराधा। रस-रीति रहः सिधि श्रीराधा ॥ ४२ ॥

[२१]

(राग कौलिंगड़ा—ताल कहरवा)

जय राधे! जय राधे! जय राधे! जय-जय राधे!
अग-जग स्वामिनि जय राधे! भगवत-भामिनि जय राधे।
केशव-कामिनि जय राधे। सुघर सुठामिनि जय राधे ॥ जय राधे०
हरि-आह्लादिनि जय राधे। मधुमय बादिनि जय राधे।
प्रेम-विवादिनि जय राधे। मोहन-मादिनि जय राधे ॥ जय राधे०
निरअभिमानिनि जय राधे। अतिसय मानिनि जय राधे।
आनँदकाननि जय राधे। नेह सुदानिनि जय राधे ॥ जय राधे०
हरि-मन-हरनी जय राधे। अति सुख करनी जय राधे।
सुषमा-सरनी जय राधे। मोद-प्रसरनी जय राधे ॥ जय राधे०
सोभाधारा जय राधे। गुन-आगारा जय राधे।
रूप-अपारा जय राधे। रस-आधारा जय राधे ॥ जय राधे०
रसिक-रसीली जय राधे। गुण-गरबीली जय राधे।
रूप-रँगीली जय राधे। स्याम-हठीली जय राधे ॥ जय राधे०
सरबस-त्यागिनि जय राधे। स्याम-सुहागिनि जय राधे।

बिमल बिरागिनि जय राधे। रसमय रागनि जय राधे ।। जय राधे०
पिय-सुख-भूली जय राधे। निज सुख भूली जय राधे।
हरि-हिय झूली जय राधे। रहती फूली जय राधे ।। जय राधे०
अति गंभीरा जय राधे। परम सुधीरा जय राधे।

[२२]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

बोलो—जय राधे, राधे, बोलो—जय राधे, राधे।
राधा माधवकी प्रान। बोलो—जय राधे, राधे।
राधा मधुमयी महान। बोलो—जय राधे, राधे।

राधा वृषभानुदुलारी, राधा श्रीकीर्तिकुमारी,
दोनोंके प्रान समान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधाकी मतिमें सो है, माधवकी मति में जो है।
दोनों ही एक मतिमान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधा अति भोली-भाली, माधव मोहन मधुशाली,
दोनोंकी न्यारी बान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधा जब निपट सयानी, माधव सजते अज्ञानी।
दोनोंकी दो पहचान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधा-माधव इकरूपा, लीलामें भिन्न स्वरूपा,
दोनों ही एक भगवान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधा माधवकी माया, माधव राधाकी छाया,
हैं छाया-मायावान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधा माधवकी प्यारी, माधव राधा-मन हारी,
दोनों दोनोंके प्रान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधा-मनमें जो आती, माधवको वही सुहाती,
दोनोंकी राय समान, बोलो—जय राधे, राधे ।।
राधाको सोइ सुहावै, माधव-मनमें जो आवै,
दोनोंका एक मन जान, बोलो—जय राधे, राधे ।।

राधा-माधवकी जोड़ी, जीओ जुग लाख-करोड़ी,
दोनों हों सुखी महान, बोलो—जय राधे, राधे ॥

[२३]

(राग झँझोटी—ताल कहरवा)

जय राधे, जय श्रीराधे। जय राधे, जय श्रीराधे ॥
रूप रँगीली, गुण-गरबीली, मन-मटकीली जय राधे।
चित-चटकीली, छैल-छबीली, रस-सरसीली श्रीराधे ॥ जय राधे०
श्याम-हठीली, सदा रसीली, शुचि शरमीली जय राधे।
द्युति-चमकीली, रस-गटकीली, पिय धमकीली श्रीराधे ॥ जय राधे०
श्याम-विहारिणि, हरि-हिय-हारिणि, शोभाधारिणि जय राधे।
प्रिय-सुखकारिणि, मुग्धाचारिणि, मदन-विहारिणि श्रीराधे ॥ जय राधे०
रस-विस्तारिणि, तमघन-तारिणि, अघ-संहारिणि जय राधे।
विपदा-जारिणि, मोह-निवारिणि, माया-मारिणि श्रीराधे ॥ जय राधे०
निज सुख त्यागिनि, स्याम-सुहागिनि, अति बड़भागिनि जय राधे।
बिषय-बिरागिनि, रसमय-रागिनि, विमल विभागिनि श्रीराधे ॥ जय राधे०
सदा सँयोगिनि, नित्य वियोगिनि, अद्भुत योगिनि जय राधे।
कुटुँब-कुयोगिनि, हरि-रस-भोगिनि, बिछुरत रोगिनि श्रीराधे ॥ जय राधे०
मधुर सुहासिनि, मृदु-मधु-भाषिनि, ललित सुलासिनि जय राधे।
रास-बिलासिनि, प्रेम-प्रकासिनि, पियहिय-वासिनि श्रीराधे ॥ जय राधे०

[२४]

(लावनी तर्ज—राग कहरवा)

जय हो अलबेली सरकार, हमारी राधारानी ॥ ध्रुव० ॥
श्रीबृंदाबन-महारानी, सर्बोपरि सब सुख दानी।
जय-जय प्यारी परम उदार हमारी राधारानी ॥ १ ॥
हित रंग-रँगीली प्यारी, रस-रूप-सिंधु उजियारी।
जय-जय-जय छबि अगम अपार, हमारी राधारानी ॥ २ ॥
हित रासेस्वरि सुकुमारी, पिय-जीवन-प्रानाधारी।

प्यारी जय-जय-जय बलिहार, हमारी राधारानी ॥ ३ ॥
प्रिय अलकलड़ी अलबेली, छन-प्रतिछन रूप नवेली।
जय-जय लाड़-लड़ी सुकुमार, हमारी राधारानी ॥ ४ ॥
हो कृपा-दया की सागर, बात्सल्यहि सिंधु उजागर।
जय-जय करुना-रस-भंडार, हमारी राधारानी ॥ ५ ॥
छमासीलऽरु परम उदारा, यह सहज सुभाव तुम्हारा।
आगम-निगम न पावैं पार, हमारी राधारानी ॥ ६ ॥
श्रीहरिबंसी हरिदासी, तुम-सहचरि रास-बिलासी।
गावैं बेद पुकार-पुकार, हमारी राधारानी ॥ ७ ॥
मोहन बंसीमें गावैं, जमुना-तट ध्यान लगावैं।
राधा-राधा नाम उचार, हमारी राधारानी ॥ ८ ॥
भूलेहु जो सरनै आवै, तुव महल-खवासी पावै।
हो इहि जनमहिं बेड़ा पार, हमारी राधारानी ॥ ९ ॥
चूकऽवगुन सिंधु समाना, लावत नहिं जनके ध्याना।
अरे, बिनु सेवा द्रवौ अपार, हमारी राधारानी ॥ १० ॥
कर्मोंका बन्धन छूटै, माया-मरजादा टूटै।
निहचय पावै नित्य बिहार, हमारी राधारानी ॥ ११ ॥
बिसरौं नाहीं बिसरावौं, छबि निज रस माहिं छकावौं।
जय-जय दीजै टहल तुम्हार, हमारी राधारानी ॥ १२ ॥
बनवारी हित जू टेरी, माधुरि चरनोंकी चेरी।
अरे अपनावौ कर जू प्यार, हमारी राधारानी ॥ १३ ॥

[२५]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

वृषभानु-दुलारी जय राधे। श्रीकीर्तिकुमारी जय राधे ॥
ललिता-सखि प्यारी जय राधे। सर्बोत्तम नारी जय राधे ॥
श्रीमाधव-भामिनि जय राधे। निष्कामा कामिनि जय राधे ॥
पद गजगति गामिनि जय राधे। पावन रस धामिनि जय राधे ॥

मृदु ईषत् हसिनि जय राधे। नवकुंज निवासिनि जय राधे ।।
शुचि प्रेम प्रकाशिनि जय राधे। रति दिव्यविकासिनि जय राधे ।।
प्रिय-हृदय बिहारिणि जय राधे। मोहन-मन-हारिणि जय राधे ।।
प्रिय-ताप-निवारिणि जय राधे। प्रिय-सुख-विस्तारिणि जय राधे ।।
नित शुद्धाचारिणि जय राधे। प्रियतम-उर-धारिणि जय राधे ।।
प्रिय-पद-अनुरागिनि जय राधे। सब बिधि बड़भागिनि जय राधे ।।
निज भोगविरागिनि जय राधे। प्रिय-भोग सुरागिनि जय राधे ।।
नित मंगल-वादिनि जय राधे। शुचि-रस आस्वादिनि जय राधे ।।
वैराग्य स्वरूपा जय राधे। विज्ञान अनूपा जय राधे ।।
प्रिय मोहन रूपा जय राधे। सेवित सुरभूपा जय राधे ।।
अभिमान विहीना जय राधे। प्रिय-सेवा-लीना जय राधे ।।
शुचि सद्गुण पीना जय राधे। सब दोष विहीना जय राधे ।।
चतुरा अति भोली जय राधे। मृदु मीठी बोली जय राधे ।।
शुचिताकी झोली जय राधे। पावन रस घोली जय राधे ।।
प्रियतम गल-हारा जय राधे। गुणरूप अपारा जय राधे ।।
व्रज चंद चकोरी जय राधे। प्रिय बन्धन डोरी जय राधे ।।
प्रियतम-सुख-सुखिया जय राधे। कान्ता-गण-मुखिया जय राधे ।।
सुंदर सुकुमारी जय राधे। प्रियहिय उजियारी जय राधे ।।
लीला रस सरिता जय राधे। प्रिय मन-सुख भरिता जय राधे ।।
आनंद-सुधा-निधि जय राधे। माधुर्य-महोदधि जय राधे ।।
प्रिय-विरहकातरा जय राधे। प्रिय-मिलन-आतुरा जय राधे ।।
प्रिय-मिलनमयी नित जय राधे। नित संग अबाधित जय राधे ।।
वर्धन रति-बेली जय राधे। नित नयी नवेली जय राधे ।।
रसमयि रासेश्वरि जय राधे। माधव-हृदयेश्वरि जय राधे ।।
नित कृष्णाकर्षिणि जय राधे। रस-सुधा-सुवर्षिणि जय राधे ।।
नित प्रिय-अनुकूला जय राधे। प्रिय-जीवन-मूला जय राधे ।।
हिय सद्गुण छाये जय राधे। नित श्याम लुभाये जय राधे ।।
त्रिभुवन जन पावनि जय राधे। शुचि प्रेम-सिखावनि जय राधे ।।
जगमंगल-कारिणि जय राधे। अघमूल-विदारिणि जय राधे ।।

[२६]

(गजल—ताल कहरवा)

अतुल आनन्द भर मनमें पुकारो भानु नृपकी जय।
मोदमें मस्त हो बोलो, मातु श्रीकीर्तिदाकी जय॥

भाद्रपद मासकी जय-जय,
पक्ष शुभ शुक्लकी जय-जय।
रुचिर तिथि अष्टमीकी जय,
काल मध्याह्नकी जय-जय॥
सरस बरसानुपुरकी जय,
भानुके महलकी जय-जय।
कीर्तिके प्रसवगृहकी जय,
चमारिन दाई-माकी जय॥

चूर आनन्द-मदमें आज बोलो राधिकाकी जय।
सलोने-साँवरे गोविन्द राधाप्राणकी जय-जय॥

परस्पर चावकी जय-जय,
प्रेमके भावकी जय-जय।
'तत्सुखी प्रेम'की जय-जय,
प्रेमके नेमकी जय-जय॥
अनोखे त्यागकी जय-जय,
विलक्षण रागकी जय-जय।
मधुर अनुरागकी जय-जय,
हमारे भागकी जय-जय॥

परम आह्लादसे बोलो ह्लादिनी राधिकाकी जय।
ह्लादिनीके परम प्रियतम मनोहर श्यामकी जय-जय॥





आविर्भाव एवं बधाई

[२७]

(गजल—ताल कहरवा)

जग उठे भाग्य अग-जगके, परम आनन्द है छाया।
श्यामकी ह्लादिनी राधा प्रकटका काल शुभ आया॥ १॥
बज उठीं देव-दुन्दुभियाँ, गान करने लगे किंनर,
सुर लगे पुष्प बरसाने, अमित आनन्द उरमें भर,
ग्वालिनी-वेष धारणकर सुन्दरी चलीं सुर-जाया॥ १॥
चले सब ग्वाल नर-नारी, वृद्ध-बालक सुसज्जित हो,
देख शोभा परम सहमे देव दम्पत्ति सुलज्जित हो,
प्रेमके राज्य पावनमें हुआ जो आज मनभाया॥ २॥
यशोदा-नन्द परमानन्द पा अति हो उठे विह्वल,
चले ले भेंट अति अनुपम, खिल उठे हृदय पङ्कज-दल,
लला थे गोद जननीके, प्रफुल्लित थी कलित काया॥ ३॥
ऋषी-मुनि हुए हर्षित, जो बने थे व्रज मधुर गोपी,
फलित होता मनोरथ जान, उनकी देह है ओपी,
हुआ सब ओर जयकारा, मिट गयी सब मलिन माया॥ ४॥

[२८]

श्रीराधाजीकी जन्म-आरती

(राग बहार—तीन ताल)

आरति श्रीबृषभानुलली की।
सत-चित-आनँद-कंद-कली की ॥ टेक ॥

भयभंजिनि भव-सागर-तारिनि,
पाप-ताप-कलि-कल्मष-हारिनि,
दिब्यधाम-गोलोक-बिहारिनि,
जनपालिनि जगजननि भलीकी ॥ १ ॥

अखिल बिस्व आनंद-बिधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नंदनँदन-पद-प्रेम प्रदायिनि,
अमिय-राग-रस-रंग-रलीकी ॥ २ ॥

नित्यानंदमयी आह्लादिनि,
आनँदघन-आनंद-प्रसाधिनि,
रसमयि, रसमय-मन-उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्ण-अलीकी ॥ ३ ॥

नित्य निकुंजेस्वरि रासेस्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेस्वरि;
गोपिगणाश्रयि गोपिजनेस्वरि,
बिमल-बिचित्र-भाव-अवलीकी ॥ ४ ॥



[२९]

(राग बागेश्री—तीन ताल)

आठैं भादौं की उजियारी ।
रावल में बृषभानु गोप कें प्रगटी राधा प्यारी ।।
श्रुति सरूप सब सँग करि लीन्हे व्रजपति हेत बिचारी ।
दासगुपाल बलभ (जू) की स्वामिनि बस कीने गिरिधारी ।।

[३०]

(राग सारंग—तीन ताल)

महारस पूरन प्रगट्यौ आनि ।
अति फूलीं घर-घर व्रजनारीं (श्री) राधा प्रगटी जानि ।।
धाईं मंगल-साज सबै लै, महा महोच्छव मानि ।
आईं घर बृषभानु गोप कें, श्रीफल सोहत पानि ।।
कीरति बदन-सुधानिधि देख्यौ, सुंदर रूप बखानि ।
नाचत-गावत दै कर-तारी, होत न हरख अघानि ।।
देत असीस सीस चरनन धरि, सदा रहौ सुखदानि ।
रस की निधि व्रज रसिकराय सौं करौ सकल दुख हानि ।।

[३१]

(राग आसावरी—ताल कहरवा)

चलौ बृषभान गोप कें द्वार ।
जनम लियौ मोहन हित स्यामा आनँद-निधि सुकुमार ।।
गावत जुबति मुदित मिलि मंगल, उच्च मधुर धुनि धार ।
बिबिध कुसुम कोमल किसलय जुत सोभित बंदनवार ।।
बिदित बेद बिधि बिहित बिप्रबर कर स्वस्तिन उच्चार ।
मृदुल मृदंग मुरज भेरी ढप दिबि दुंदुभि रवकार ।।
मागध-सूत-बंदि-चारन जस गावत मोद अपार ।
हाटक-हीर-चीर-पाटंबर देत सँभार-सँभार ।।
धेनु सकल सिंगारि बच्छ जुत लै चले ग्वाल पुकार ।
(जै श्री) हित हरिबंस दूध-दधि छिरकत, माँझ हरिद्रा गार ।।

[३२]

(गजल—ताल कहरवा)

हृदय आनन्द भर बोलो बधाई है !—बधाई है !!
हमारे भाग्य हैं जागे, जो 'लाली' घरमें आई है !!
धन्य बृषभानुपुर सुन्दर,
धन्य बृषभानु-नृप-मन्दिर,
धन्य वह कक्ष मङ्गलकर
अजन्मा जहाँ जाई है ॥ हृदय आनन्द०
शुभ सित पक्ष, भादौं मास,
शुभ अति अष्टमी सुख-रास,
शुभ नक्षत्र अभिजित खास,
जिनमें राधा आई है ॥ हृदय आनन्द०
कामकी कालिमा हरकर,
प्रेमकी छबि प्रकाशितकर,
रस-सुधासे विषय-विष हर,
प्रेमकी बाढ़ छाई है ॥ हृदय आनन्द०
खोलकर नेहके झरने
सुखी निज स्यामको करने,
हृदय आनन्दसे भरने
स्वयं श्यामा जु आई है ॥ हृदय आनन्द०
हृदय है यह कन्हैया की,
प्राण है यह कन्हैया की,
आत्मा यह कन्हैया की
सुधा बरसाती आई है ॥ हृदय आनन्द०
एक ही दो बने हैं जो,
दो रहकर एक ही हैं सो,
रसास्वादन कराने को

यह रसकी सरिता आई है ॥ हृदय आनन्द०

पुकारो भानु नृपकी जय,
औ मैया कीर्तिकी जय-जय,
हुआ दम्पत्तिका भाग्योदय,
जिनकी कन्या कहाई है ॥ हृदय आनन्द०

[३३]

(राग आसावरी—तीन ताल)

भानु-घर उत्सव आज महान ।
परमानँद-आनंददायिनी प्रकट भई सुख-खान ॥
रूप अनूप, स्वरूप अलौकिक, आनँद-सुधा-समुद्र ।
मिट्यो मोह-तम, दुरित दह्यौ, देखतहीं दुख-दारिद्र ॥
उमग्यौ प्रेम-समुद्र सुद्ध मधु, नस्यौ स्वार्थकौ बीज ।
उखर्‌यौ बिबिध अनर्थ-मूल, माया कौ बिटप सबीज ॥
हरषित इत-उत धावत, गावत-नाचत सब पुर लोग ।
प्रकटीं धन्य करन जग कौं श्रीराधा सुभ-संजोग ॥

[३४]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

आजु बृषभान-भवन आनँद अति छायौ ।
राधा अवतार भयौ, सब कौ मन भायौ ॥
दुंदुभि नभ लगीं बजन, सुमन लगे बरसन ।
धाए पुरबासी सब, करन कुँअरि-दरसन ॥
मंगल-उत्साह मुदित नारि सकल गावत ।
लै लै कमनीय भेंट कीर्ति-महल आवत ॥
नचत बृद्ध-तरुन-बाल, भए सब नचनियाँ ।
तिन के मुख धन्य होन प्रगटी रागिनियाँ ॥
राधा कौ जन्म जानि प्रेमी सब धाए ।
प्रेम-सुधा-बरसन की आस मन लगाए ॥

राधा बिनु हरै कौन मुनि-मन-हर-मन कौं।
प्रगटै बिनु पात्रको अनंद-रस-घन कौं॥
बरसैगो कृष्नघन पाय पात्र राधा।
रसधारा पावन तब बहैगी बिनु बाधा॥
आए तँह बिबिध बेष सुर-मुनि-रिषि भव-अज।
दरसन कौं, परसन कौं कुँवरि-चरन-पंकज॥
आए नंद-जसुमति अति चित में हरषाए।
बिबिध रत्न-मुकता-मनि भेंट संग लाए॥
प्रसव-घर पधारि महरि कुँवरि लेत कनियाँ।
चूमत अति लाड़-चाव जात बलि निछनियाँ॥
उभय मातु मिलीं अमित स्नेह तन-मन तें।
कहि न जाय मिलन-प्रीति-रीति लघु बचन तें॥
नंद-बृषभानु मिले हिय सौं हिय लाए।
छायौ चहुँ ओर मोद, गोद नँद भराए॥

[३५]

(राग खमाच—ताल दादरा)

द्वार बृषभान के आजु भई भीर री।
उमगि चल्यौ रसनिधि, छाँड़ि निज तीर री॥
गोप-गोपि, बाल-बृद्ध, तजि धन-धाम री।
खिंचे-से आये सब खोय घर-काम री॥
दधि-अच्छत, दूब-हरद, कुंकुम भरि थार री।
आय जुरे अगनित जन सजि-सजि सिंगार री॥
नाचत सब नारि-नर छाँड़ि सकल लाज री।
छिरकत दधि-हरद, करत आँनद-धुनि-गाज री॥
गुनीजन गावत सब, नाचत दै ताल री।
आनँद-मद-माते गीत गावत रसाल री॥
भई आज सब की मनभाई सुखद बात री।

नाचि उठे अंग-अंग पुलकित भए गात री ॥
आए अज, ईस, इन्द्र, बरुन अरु कुबेर री ।
लच्छी, सरसुती, सती, सची देबि ढेर री ॥
धरि कैं ग्वाल-गोपी-तन करत कीर्ति-गान री ।
किंनर-गंधर्ब बने गोप भरत तान री ॥
जय-जय बृषभानु, जयति भानु, कीर्तिरानि री ।
सब के हित भए आजु परम सुखदानि री ॥
बरसि रह्यौ रस अनूप भूप भानु द्वार री ।
भए सब सब के आनंद-आगार री ॥

[३६]

(राग कालिंगड़ा—ताल कहरवा)

वह धन्य घड़ी है आई । कीरति ने राधा जाई ।
तब सब दिसि बजी बधाई । सब के मन मुदिता छाई ॥
लक्ष्मी बन दाई आई । ग्वालिनि सब मिलि-मिलि धाई ।
परसा-धरसा की माई । बनि-ठनि कै सबै लुगाई ॥
सब चलीं हियँ हरषाई । सब ही सब के मन भाई ।
कीरति-मंदिर प्रबिसाई । जिनि रोकौ, देत दुहाई ॥
जब खबर नंद ने पाई । जसुमति कौं संग लेवाई ।
लाली-मुख निरखन ताँई । पहुँचे बरसाने आई ॥

[३७]

(राग सारंग—तीन ताल)

धन्य घरी, धनि भादौं मास ।
धनि आठैं तिथि, पख उजियारौ,
धनि अभिजित नच्छत्र प्रकास ॥
प्रगटीं जामें जग की स्वामिनि,
नित हरि भामिनि सब सुख मूल ।

भयौ प्रकास अखिल जन मन-नभ
मिटी ताप तीनहु की सूल ॥
घर-घर में छायौ सुख सुचि अति,
घर-घर भए मंगलाचार ।
अति उछाह सब मगन नारि-नर
नाचत गावत सजि सिंगार ॥
भानु नृपति अति मगन परम सुख
करत अमित मनि-हेम सुदान ।
अति उदार, धन-धान्य लुटावत,
ललित लली सुख हित मतिमान ॥
खग-मृग, भृंग-भुजंग, जीव सब,
आनँद-मगन भूलि निज बात ।
मन अनुभवत परम सुख, बिनु रितु,
जड तरु-लता प्रफुल्लित गात ॥
मारुत मंद-सुगंध बहत नभ,
निरमल सीतल तेज अपार ।
बिकसी प्रकृति आज चहुँ दिसि, लखि
मूल प्रकृति कौ नव अवतार ॥
आई जग के पावन कारन,
सुखनिधि कौं अतिसय सुख दैन ।
परिनत भयौ कलुष तजि रतिमय
पावन परम अपावन मैन ॥
परब मनावहु, गावहु-नाचहु
आज समुद सब तजि मद-मान ।
बाँटहु सबै बधाई मिलि कह
'जय कीरति, जय-जय बृषभान' ॥

[३८]

(राग बागेश्री—तीन ताल)

भादौं सुदि आठैं उजियारी।
श्रीबृषभानु गोप कें मंदिर प्रगटी राधा प्यारी॥
नाचत नारि नबेली छबि सौं पहिरें रँग-रँग सारी।
घर-घर मंगल लखि बरसानें, कहत रमा—हौं वारी॥
इक आई, इक आवति-गावति, इक साजति सुनि नारी।
चंचल कुंडल ललकैं, झलकैं, करन बिराजत थारी॥
भई बधाई, कही न जाई, छबि छाई अति भारी।
रसभरि खोरि पौरि भइ, दधि-घृत बहि चलि उमगि पनारी॥
कीरति की कुल-कीरति जगमें भाग-सुहाग-दुलारी।
दामोदर हित बृंदाबन में बिहरत लाल बिहारी॥

[३९]

(राग सारंग—तीन ताल)

आज रावल में जय-जयकार।
प्रगट भई बृषभानु गोप कें श्रीराधा अवतार॥
गृह-गृह तैं सब चलीं बेग दै गावत मंगलचार।
प्रगट भई त्रिभुवनकी सोभा रूप-रासि सुखसार॥
निरतत, गावत, करत बधाई, भीर भई अति द्वार।
परमानँद बृषभानुनंदिनी जोरी नंददुलार॥

[४०]

(राग भीमपलासी—ताल कहरवा)

प्रगटी राधा रावल में बृषभानू-कीर्ति-दुलारी।
राधा व्रज की ठकुराइन, अभिराम श्याम की प्यारी॥
राधा आह्लादिनि देवी, नित, माधव पर बलिहारी।
राधा माधव की आत्मा, माधव से कभी न न्यारी॥
राधा नित रास-रसेश्वरि, माधव नित रासविहारी।

राधा-माधवकी लीला शुचि सत्य नित्य अविकारी ॥
राधा अर्पण की मूरति, हैं श्याम समर्पण-कारी ।
राधा आराधन-रत नित, प्रिय राधाऽऽराधनकारी ॥
दोनों दोनों के प्रेमी, प्रेमास्पद रस-भंडारी ।
नित एक तत्त्व दो तन हैं, मधु लीलारस विस्तारी ॥

[४१]

(राग सारंग—तीन ताल)

आज बधाई बाजत रावल ।
श्रीबृषभानु राय घर प्रगटी स्यामा स्याम-सुखावल ॥
गृह-गृह तैं गोपी बनि आईं आनंदित नंदावलि ।
मानौ कनक-कंज-मकरंदहि पिवत जिवत मधुपावलि ॥
नाचत-गावत, बेनु बजावत, हेरि देत गोपावलि ।
दधिकाँदौ भादौं झरि लायौ प्रेम मुदित ब्यासावलि ॥

[४२]

(राग गजल—ताल कहरवा)

बज रही गाँव रावलमें आज मङ्गल-बधाई है ।
कीर्तिदा-रानिके घर सुघर राधा कुँवरि जाई है ॥

मोद मनमें अतुल भरकर,
जेवरों-जरोंसे सज कर,
सोच घर-बारका तज कर,
गोपियाँ घरसे आई हैं ॥ बज रही० ॥

नाचते गान सब करते,
वेणुमें सूर मधुर भरते,
गोप डगमग चरण धरते,
मोद-मदता जु छाई है ॥ बज रही० ॥

बड़े-छोटे हजारों घट,
दही-माखनसे भर झटपट,
गोपिका-गोप सब चटपट
पहुँच हुड़दंग मचाई है ॥ बज रही० ॥

दही-नवनीत-पय लेकर,
डोलियाँ छोड़ते भर-भर,
दधिकाँदौ ही नहि रहकर,
नदी गोरस बहाई है ॥ बज रही० ॥

वृद्ध-बालक-तरुण अड़ते,
सभी गोरस-समर लड़ते,
कूदते उछलते पड़ते,
लोक-लज्जा गँवाई है ॥ बज रही० ॥

[४३]

(राग धनाश्री—तीन ताल)

स्यामघन दामिनि प्रगट भई ॥
रसनृप रसिक-रिझावनि पावनि रम्या सुरसमई ।
अंग-अंग अतुलित श्री-सोभा कोटिक रति लजई ॥
सकल-बिस्व-आकर्षक-कर्षिनि छबि सौंदर्य छई ।
नित्य पराजित रहत सहत जो अखिल जगत बिजई ॥
परम सती प्रिय-सुख-कामिनि नित निज सुख बिसरि गई ।
रूपरासि गुनरासि अमित सुचि प्रगटत नई-नई ॥

[४४]

(राग भैरवी—तीन ताल)

प्रगट्यौ सब ब्रज कौ सिंगार ।
कीरति-कूखि औतरी कन्या, सुंदरता कौ सार ॥
नख-सिख रूप कहाँ लौं बरनौं, कोटि मदन बलिहार ।
परमानँद बृषभानु-नंदिनी जोरी नंद-दुलार ॥

[४५]

(राग सारंग—ताल दीपचंदी)

प्रगट भई सोभा त्रिभुवन की श्रीबृषभान गोप कें आई ।
अद्‌भुत रूप देखि ब्रजबनिता रीझि-रीझि कैं लेत बलाई ।।
नहिं कमला न सची रति रंभा, उपमा उर न समाई ।
जा हित प्रगट भए ब्रजभूषन, धन्य पिता, धनि माई ।।
जुग-जुग राज करौ दोऊ जन, इत तुम, उत नँदराई ।
उन कें मदनमोहन, इत राधा, 'सूरदास' बलि जाई ।।

[४६]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

प्रगटी अनूप भूप भानु घर दुलारी ।
राधा सुचि मधुर-मधुर कीर्तिदा-कुमारी ।।
चंद्र-बदन-कमल मधुर, उभय हस्तकमल मधुर ।
बिसद नयन-कमल मधुर, आनँद बिस्तारी ।।
अरुन चरन-कमल मधुर, भौंह मधुर, भाल मधुर ।
अधरनि मुसकान मधुर, मोहनी मुरारी ।।
जन्म मधुर, कर्म मधुर, लीला अति ललित मधुर ।
भाव मधुर, चाव मधुर सरबस बलिहारी ।।
त्यागकी सुनीति मधुर, प्रेमकी सुरीति मधुर ।
'तत्सुख-सुख' प्रीति मधुर, माधव-मनहारी ।।

[४७]

(राग जंगला—ताल कहरवा)

कीर्ति-कुक्षिकी कीर्ति जगत्‌में अनुपमेय, नहिं तुलना और ।
प्रकट हुई जिससे माधवकी प्रिया, नित्य सबकी सिर-मौर ।।
नहीं जगत्‌में कहीं किसीका यश बृषभानु नरेश समान ।
पिता बने राधाके, जिनके रति-परतन्त्र स्वयं भगवान ।।
धरा हुई वह धन्य, हुआ महिमान्वित छोटा रावल ग्राम ।

प्रकटीं जहाँ राधिका रानी सच्चित्-सुखमयकी सुखधाम ॥
धन्य सूर्य-शशि, धन्य पुण्य वे अनल, अनिल, शुचि जल, आकाश ।
देखा भाग्यवान जिन सबने राधाका प्राकट्य-विकास ॥
धन्य मनुष्य, धन्य पशु-पक्षी, तिर्यक सारे, कीट-पतङ्ग ।
देखा श्याम-सुखद राधाका कभी जिन्होंने कोई अङ्ग ॥
धन्य आज हम, जो कर पाये श्याम-स्वामिनीके गुणगान ।
धन्य, सुन रहे, मिला रहे जो इन गीतोंमें अपनी तान ॥

[४८]

(राग परज—तीन ताल)

तू देखि सुता बृषभान की ।
मृगनैनी सुंदर सोभानिधि अँग-अँग अदभुत ठान की ॥ १ ॥
गौर बरन बहु कांति बदन की, सरद-चंद-उनमान की ।
बिस्वमोहनी बालदसा में कटि केहरि सुबँधान की ॥ २ ॥
बिधि की सृष्टि न होइ मनौ यह, बानिक औरै बान की ।
चत्रभुज-प्रभु गिरिधर लायक ब्रज प्रगटी जोट समान की ॥ ३ ॥

[४९]

(राग जंगला—ताल कहरवा)

प्रकट हुई बृषभानु-राजगृह राधा परम प्रेमकी खान ।
जिनके शुचि माधुर्य दिव्यपर मोहित नित्य स्वयं भगवान ॥
जिनका बढ़ता रहता प्रतिपल नित नूतन सच्चिन्मय रूप ।
रसवर्षिणि, रसराजाकर्षिणि, प्रियतम-मन-हर्षिणी अनूप ॥
नित्य निकुञ्जेश्वरि, रासेश्वरि, हरि-हृदयेश्वरि अति पावन ।
प्राणाधिका प्रियतमा प्रियकी प्राणेश्वरि नित मन-भावन ॥
काम-कलुष-हारिणि, विस्तारिणि दिव्य त्यागमय प्रेम पुनीत ।
अतुलनीय ऐश्वर्य-स्वामिनी, पर अति दीना, सहज विनीत ॥
देती सदा सहज प्रियतमको अविरत वह अपार सुखदान ।
पर देनेका स्मरण न रहता, कभी नहीं होता अभिमान ॥

चतुर-चित्त-हारिणि, संचारिणि अहंरहित शुचि सेवा-भाव।
सहज सदा वर्धित होता है जिसमें प्रिय-सेवाका चाव॥
इसीलिये वे नित्य पूर्णतम, पूर्णकाम, श्रीकृष्ण अकाम।
राधाके रस-आस्वादनकी नित इच्छा करते अभिराम॥
क्योंकि पूर्ण उसमें है पावन राधाका आत्यन्तिक त्याग।
अत: स्व-सुख-कल्पना-शून्य वह रखती प्रियतममें अनुराग॥
वही प्रेमरूपा राधा है प्रगटी बरसानेमें आज।
इसीलिये सब प्रकृति कर रही स्वागत, सजकर सुंदर साज॥
सभी लोक-लोकान्तरमें है गूँज रहा जय-जय-जय-घोष।
परमानन्द छा रहा अनुपम, नहीं किंतु उसमें संतोष॥
किसी तरह वह व्यक्त नहीं हो सकता मनका परमानन्द।
नहीं शब्द-संकेत कि जिनसे प्रगट हो सके वह स्वच्छन्द॥

[५०]

(राग मालव—ताल कहरवा)

बरसगाँठि बृषभान-कुँवरि की कीरति गीत गवाए जू।
चंदन-अगर लिपाइ अरगजा, मोतिन चौक पुराए जू॥
नंदीसुर ते नंद-जसोदा सहसुत न्यौति बुलाए जू।
गोपी-गोप, गाय-गोसुत लै चलि बरसाने आए जू॥
तब बृषभान बढ़े आदर सौं निज मंदिर पधराए जू।
भीतर भवन जसोदा-कीरति मिलत परम सुख पाए जू॥
जसुमति-कनिया तैं लालन लै कीरति गोद खिलाए जू।
ब्रजरानी लइ कुँवरि गोद ब्रजनारिन मंगल गाए जू॥

[५१]

(राग सारंग—ताल झप)

बरसानें बर सरोबर प्रगट्यौ अदभुत कमल।
बृषभानु-किरन-प्रकास पोष्यौ रहत प्रफुलित सदाई यह सरस सुंदर अमल॥
सखी चहुँ दिसि केसरदल करनिका आकार राजत राधिका-जस धवल॥
सूरदास मदनमोहन पिय नव मकरंद हित सेवत सदा अति नलिन अलि॥

[५२]

(राग भैरव—तीन ताल)

प्रगटी नागरि रूप निधान।
देखि-देखि बूझत जो परसपर, नहिं त्रिभुवन में आन।।
उपमा कौं जे-जे कहियत हैं, ते जु भये निरमान।
कुंभनदास लाल गिरधर की जोरी सहज समान।।

[५३]

(राग सारंग—ताल कहरवा)

राधा जाई, आनँद लाई, नाचौ रे, नाचौ, सब ग्वाल!
दधि-माखनकी नदी बहाओ, आज सबै हो गये निहाल।।
अगनित भरे माट माखन-दधि केसर-घोले लाये लोग।
मतवाले-से लगे छिड़कने खूब परस्पर शुभ-संयोग।।
आय गई इतनेमें नँदकी सेना लै माखन-दधि-हाट।
दधिकाँदौमें भई हरषधुनि ढुरकन लगे माट-पर-माट।।
माखन-दधिकी सरिता उमड़ी, बही सुधा-आनँदकी धार।
नाचन लगे भानुनृप, बाबा नन्द समुद सब लाज बिसार।।
आय मिले बरसाना-रावलके लड़कों सँग तोक-सुदाम।
रैंदा-पैंदा, ग्वाल-बाल सब, मधुमङ्गल, मनसुख, सुखराम।।
कूद-कूद सब लगे नाचने माखन-दधि-सरिताके बीच।
लगे मारने माखन-लौंदे हर्षोन्मत्त उलीच-उलीच।।
मोदभरे बरसानेवाले बोले 'नँद बाबाकी जय।'
बोल उठे नंदीश्वरवाले 'जय, बृषभानुराजकी जय।।'

[५४]

(राग कालिंगड़ा—तीन ताल)

मैं देखी सुता बृषभानकी।
जननी सँग आई ब्रज-रावर सोभा-रूप निधान की।। १।।
नैक सुभाय ते भृकुटी टेढ़ी, बेनी सरस कमान की।

नैन कटाच्छ रहत चितवत ही, चितवनि निपट अयान की ॥ २ ॥
पग जेहरि कंचन रोचन-सी तनक-सी पोहोंची पान की।
खगवारी गरें द्वै लर मोती, तनक तरुवनी कान की ॥ ३ ॥
लै बैठी हँसि गोद जसोदा, मन में ऐसी बान की।
सूरदास प्रभु मदनमोहन हित जोरी सहज समान की ॥ ४ ॥

[५५]

(राग आसावरी—तीन ताल)

प्रेम की मूरति नागर नट की।
पुन्य थली बरसानें प्रगटी, माया की छाया सब सटकी ॥
राधा-प्रेम-सुधा-रस-सरिता अटकत नायँ काहु की हटकी।
चली अबाध अमी-रस-धारा हरि की ओर, कितहुँ नहिं भटकी ॥
रागी हरिपद, विषय-बिरागी जन जे अवगाही रस गटकी।
ते सजि गोप-गोपिका आए, लै-लै सिर दधि-माखन-मटकी ॥
निरखन लगे, करन न्यौछावर, रासि-रासि आभूषन-पट की।
सोहत बंदनवार-पाँति सुभ, कदली खंभ, सुमंगल घट की ॥
'अचल सुहाग' असीसत बृद्धा, जुबती हँसत-हँसावत मटकी।
नाचत-गावत सुधि बिसारि सब, सहजहिं लाज-सरम सब झटकी ॥

[५६]

(राग रामकली—तीन ताल)

आज बरसानें बजति बधाई।
भाग बड़े रानी कीरति के, जिन यह कन्या जाई ॥
दुंदुभि-ढोल, भेरि-सहनाई, बाजे बाजत द्वारें।
श्रीबृषभानु रायजु की पौरी धूम मची अति भारें ॥
दान देत बृषभान भाव तें, जिन जाच्यौ तिहिं काल।
कृष्नदास सब देत असीसन, चिरजीवौ यह बाल ॥

[५७]

(राग सारंग—तीन ताल)

हेरी हे ! आज बृषभान कें आनँद भयौ ।
नाचत गोपी-ग्वाल परसपर, छिरकत हरद-दह्यौ ।।
स्त्रवन सुनत गृह-गृह तैं निकसीं सुंदरि साज सिंगार ।
हरद-दूब-अच्छत-दधि-कुमकुम चलि कंचन भरि थार ।।
बीना बेनु बखान महुवरी, बजे पखावज-ताल ।
हँसत परसपर प्रेम मुदित मन, गावत गीत रसाल ।।
धनि बृषभान गोप, धनि कीरति, धनि बरसानौ गाम ।
धनि-धनि प्रगट भए आनँद-निधि, धनि श्रीराधा नाम ।।
सिंधुसुता, गिरिसुता, सची, रति, कोऊ नाहि समान ।
धनि-धनि दास गोबिंदकी स्वामिनि, ब्रज की जीवन-प्रान ।।

[५८]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

हौं इक नई बात सुनि आई ।
कीरति रानी कुँवरी जाई, घर-घर बजत बधाई ।।
द्वारें भीर गोप-गोपिन की, महिमा बरनि न जाई ।
अति आनंद होत बरसानें, रतन-भूमि निधि छाई ।।
नाचत तरून बृद्ध अरु बालक, गोरस-कीच मचाई ।
सूरदास-स्वामिनि सुखदायनि मोहन-सुख हित आई ।।

[५९]

(राग सारंग—तीन ताल)

भानुपुर बाजत बिपुल बधाई ।
आनँदघन-आनंदिनि कन्या कीरति रानी जाई ।।
अति कमनीय रूप अतुलित सुचि प्रेम-सुधा-रस-बर्षी ।
अखिल जगत जित बिस्व-बिमोहन मोहन मन आकर्षी ।।
उदए भानु भानुघर कोटिन, द्युति उज्ज्वल छिति छाई ।

बिनस्यौ काम-कलुष-तम, कोटिन ससि सीतलता आई ।।
जाके दरसन कौं सुर-मुनि नित सकल लोक ललचावैं ।
सोइ हरिप्रिया कीर्ति क्रोड़हिं लै हरषित हिय हलरावैं ।।
धन्य भए बृषभान, सराहत भाग्य भुवन मुनि ग्यानी ।
जिन के घर प्रगटीं हरि की हृदयेस्वरि राधारानी ।।

[६०]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

मँगल बधाइयाँ हो, बँट रही भानू के दरबार ।
राधिका प्रेम मूरति हो, छबीली ने लीनौ अवतार ।।
सुहासिनि नारियाँ हो, कर रहीं सब कुल के आचार ।
गा रहीं गीत मंगल हो, लौन राई कर अति मनुहार ।।
सुहासिनि सब बड़भागिनि । जय-जय । कर रहीं नेग सुहागिनि ।।
जय-जय ।।
पहन केसरिया जामा । जय-जय । बजाते ढोल-दमामा ।।
जय-जय ।।
नचनिया नाच दिखाते । जय-जय । मस्त हो तान लगाते ।।
जय-जय ।।
गा रहे मधुर गुनीजन । जय-जय । हर रहे हैं सब के मन ।।
जय-जय ।। मँगल०
ज्योतिषी भट्टजी हो, आए माथे तिलक सँवार ।
पोथियाँ संगमें हो, लाये पूरन करन विचार ।।
शोध शुभ लग्नको हो, देखते सभी ग्रहोंके स्थान ।
सभी ग्रह उच्चके हो, दुर्लभ देखें अचरज मान ।।
ज्योतिषी सब चकराये । जय-जय । मनहिं-मन अति हरषाये ।।
जय-जय ।।
भानु नृप बोलि लिये तब । जय-जय । सुनाई गुन-गाथा सब ।।
जय-जय ।।

मानवी नहीं कुँवरि यह। जय-जय। प्रेम-रस-सुधा-गन्धवह ॥
जय-जय ॥
नित्य यह हरिकी प्यारी। जय-जय। नहीं तिन तें यह न्यारी ॥
जय-जय ॥ मँगल०

मोद भरकर हृदयमें हो भानुने खोल दिये भंडार।
रत्न, धन, धाम, कंचन हो, लुटाये हाथों खुले उदार ॥
दूधकी तरुण गायें हो, करीं लाखों द्विजों को दान।
किया सम्मान-पूजन हो, नम्र हो, छोड़कर अभिमान ॥
लुटी संपत्ति अनूठी। जय-जय। हीर के हार अँगूठी ॥
जय-जय ॥
भानु-मन तृप्ति न आई। जय-जय। वृत्ति दे-दे न अघाई ॥
जय-जय ॥
रहा अब भिक्षु न कोई। जय-जय। दरिद्रता सबकी खोई ॥
जय-जय ॥
मिटा सबका मँगतापन। जय-जय। हुए दाता उदार-मन ॥
जय-जय ॥ मँगल०

सुनत मङ्गल संदेश हो, बाबा नन्द उठे हरषाय।
खबर दी जाय अंदर हो, जसोदा-उर आनँद न समाय ॥
सँजोये रत्न-भूषण हो, भरे शुभ वस्तुओंसे थाल।
स्वर्णके, संग अपने हो, ले चलीं, सखीदल सुविशाल ॥
नन्दबाबा भी आये। जय-जय। संग जसुमति को लाये ॥
जय-जय ॥
माट माखन के सिर धर। जय-जय। चले सँग अगणित चाकर ॥
जय-जय ॥
देखने लाली आई। जय-जय। मात जसुदा मन भाई ॥
जय-जय ॥
महलके अंदर जाकर। जय-जय। मिली कीरतिसे सादर ॥
जय-जय ॥ मँगल०

देखकर जसुमति रानी हो, कीर्तिदा मन अति मोद भराय ।
उठा निज कर लालीको हो, दई जसुमतिकी गोद सुलाय ॥
निरख मुखचंद्र प्रभामय हो, यशोदा आनँद-रस फूली ।
रह गई अपलक निरखत हो, देहकी सुधि सहसा भूली ॥
हुआ जब चेत, लजाई । जय-जय । कुँवरि तब हिये लगाई ॥
जय-जय ॥
रतन-धन किये निछावर । जय-जय । भई नहिं तृप्ति तनिक भर ॥
जय-जय ॥
भामती मनकी चीन्हीं । जय-जय । असीसें लाखों दीन्हीं ॥
जय-जय ॥
कीर्तिदाने सनमानी । जय-जय । यशोदा अति सुख मानी ॥
जय-जय ॥ मँगल०
नंद सँग गोप-ग्वाले हो, नाचते आये करते रंग ।
छेड़ते तान टेढ़ी हो, मचाते रस्ते भर हुड़दंग ॥
भङ्गिमा करते अदभुत हो, सभी रस-आनँद-मद-माते ।
छोड़ सँकोच-संभ्रम हो, गीत सब हँसीभरे गाते ॥
आय पहुँचे बरसाने । जय-जय । लगे माखन बरसाने ॥
जय-जय ॥
लिये दधि-माखन-मटके । जय-जय । कर रहे सुन्दर लटके ॥
जय-जय ॥
बहा दी माखन-धारा । जय-जय । भरा बरसाना सारा ॥
जय-जय ॥
मिले सब ही आ-आकर । जय-जय । भये आनँदके आकर ॥
जय-जय ॥ मँगल०
मनसुखा, धनसुखा, बल हो, तोक, मधुमङ्गल, दाम, मदार ।
चपलता सहज सबमें हो, कर रही थी पूरा विस्तार ॥
नन्द बाबाके ही सँग हो, आ गये थे ये बाल अनेक ।

यहाँ बरसानेवाले हो मिले, हो गये तुरत ही एक ॥
हृदयमें अमित मोद भरि। जय-जय। लगे नाचन माखन-सरि ॥
जय-जय ॥
नन्द वृषभानु-हाथ धर। जय-जय। नाचते लज्जा तजकर ॥
जय-जय ॥
श्वेत दाढ़ी है हिलती। जय-जय। भानु-दाढ़ीसे मिलती ॥
जय-जय ॥
मचा आनँद-कोलाहल। जय-जय। सिहाता देख देव-दल ॥
जय-जय ॥ मँगल॰

देव-देवियाँ आ गयीं नभमें बैठि विमान।
बरसाये सुरभित सुमन आनँद-मग्न महान ॥

[६१]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

जो रस बरस रह्यौ बरसानें, सो रस तीन लोकमें नाहिं।
तीन लोकमें नाहिं, वो रस बैकुंठहु में नाहिं ॥ जो रस॰
सँकरी गली बनी परबत की, दधि लै चली कुमरि कीरति की,
आगें गाय चरैं गिरिधर की, दीने सखा सिखाय ॥ जो रस॰
दै जा दान कुमरि ! मोहन कौं, तब छोड़ूँ तेरे गोहन कौं,
अंग सँभारन लागी तन कौं, मन में अति हरषाय ॥ जो रस॰
इनके संग सखीं मदमाती, उनके संग सखा उतपाती,
घेरि लईं ग्वालिन रसमाती, मन में अति हरषाय ॥ जो रस॰
सुर तैंतीसन की मति बौरी, भजि कैं चले बिरज की ओरी,
देखि-देखि या ब्रज की खोरी, ब्रह्मादिक ललचाय ॥ जो रस॰
घासीराम कहै कर जोरी, चीरंजीव रहौ यह जोरी,
कृपा करै बृषभान-किसोरी, तबहीं सब दुख जाय ॥ जो रस॰

[६२]

(राग कालिंगड़ा—ताल कहरवा)

बरसाने तैं दौरि नारि एक नंदभवन में आई (जू)।
आज सखी मंगल में मंगल कीरति कन्या जाई (जू)॥
सुनि जसुमति-मन हरष भयौ अति बोलि लईं ब्रजबाला (जू)।
मुक्ता-मनि-माला भूषन बर पठई साज रसाला (जू)॥
चलि गज-गामिन साथन हाथन कंचन थार सुहाए (जू)।
कमलनिके ऊपर खेलत मानौ अगनित चंद जु धाए (जू)॥
डहडहे मुख छबि छाजत, राजत, लाजत कोटिक मैना।
कंजन पर खेलत मानो खंजन, अंजन-रंजित नैना (जू)॥
कुंडल-मँडित बने अति राजत, उपमा अधिक बिराजै (जू)।
हार सुढार उरन पर सोहत, निरखि सची-छबि लाजै (जू)॥
गावत गीत, करत जग पावन, भामिनि मंदिर आईं (जू)।
नंदरायजू के आँगनमें आनँद बजत बधाई (जू)॥
देखि मुदित बृषभान भए अति, भेट रुची सौं लीनी (जू)।
गदगद कंठ सबन सौं बोलत, बीथिन पावन कीनी (जू)॥
कीरति ढिंग निरखी सुठि कन्या, धन्या अधिक अपारा (जू)।
कौतिक में कौतिक रस भीने बरषत सीसन धारा (जू)॥
सब जग धाम, धाम पुनि जाकौ, सेष धाम जेहि माने।
नंददास सुख कौं सुखसागर प्रगटी है बरसानें॥

[६३]

(राग बसंत—तीन ताल)

रावल राधा प्रगट भई।
अब ब्रज बसि सुख लेहु सखी री ! प्रगटि कुँवरि रसमई॥
जा निधि कौं सब चाहत हैं, सो कीरति तुमहि दई।
रामदास गोकुल आयौ, जसुमति पै बधाई लई॥

[६४]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

जसुमति लै संग नंद, छायौ मन अति अनंद,
नंदीसुर तें सुछंद बरसानें आए ॥
लाली-मुख-इंदु बिमल निरखन हित चित्त बिकल,
ग्वार-गोपि साथ सकल, मन अति हरषाए ॥
मधुमंगल, नूनखार, रैंदा, पैंदा, भँगार,
मनसुख, मुनवा, मदार, कर सिंगार धाए ॥
दधि-माखन भरे माट, गोपन सिर धरे ठाट,
माखन की मनौं हाट चली सगबगाए ॥
नाचत-गावत सलौन, बूझत नहिं कहाँ कौन,
पहुँचे बृषभान-भौन, सादर समुहाए ॥
जसुमति लै नारिबृंद, भीतर के महल-बंद,
लाली बदनारबिंद, निरखन मन भाए ॥
अंदर कीन्हौ प्रबेस, गोपी सब सुघर बेस,
कीरति कौं सुख बिसेस, नंद-घरनि आएँ ॥
लाली कौं उठाय करनि, दई अंक नंद-घरनि,
स्नेह-सुधा हिएँ भरनि, प्रेम-अश्रु आए ॥
बार-बार चूमत मुख, उभय मातु पूरित सुख,
मिटे सकल द्वंद-दुःख, निरखि सुर सिहाए ॥

[६५]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

जय राधे, जय जय राधे। जय राधे, जय जय राधे ॥
रावल में छायौ आनंद, प्रगटी राधा आनँद-कंद। जय राधे०
नंदीसुर तें आये नंद, लीन्हे सँग उपनंद, सनंद ॥ जय राधे०
जसुदा मैया रोहिनि संग, दाऊ-कान्हा लियैं उछंग। जय राधे०
-रैंदा-पैंदा, तोक-सुदाम, मधुमंगल, मनसुख, सुखराम ॥ जय राधे०

दधि-माखन कौ लै उपहार, पहुँचे सब सज-सज सिंगार। जय राधे०
नृप बृषभानु मुदित भए देख, स्वागत कर मन हरष बिसेष॥ जय राधे०
जसुदा-रोहिनि भीतर जाय, मिली कीर्तिदा अति हरषाय। जय राधे०
लाली कौं अति लाड़ लड़ात, जसुदा-मन नहिं मोद समात॥ जय राधे०
लाला के मुख मोद अपार, निरख करत-सब जै जैकार। जय राधे०

[६६]

(राग जंगला—ताल कहरवा)

त्यागमूर्ति श्रीराधा आयीं जगको त्याग सिखाने आज।
दिव्य प्रेमका मर्म बताने प्रगट हुईं लेकर सब साज॥
कायव्यूह गोपी सब प्रगटीं, प्रगट हुए व्रजपति युवराज।
प्रगटे वन-सुषमा, मलयानिल उद्दीपनके सभी समाज॥
रावल ग्राम भूमि, गृह, दिन, नक्षत्र, हो गये सब ही धन्य।
मिली परम निधि आज अलौकिक दुर्लभ अद्भुत मधुर अनन्य॥
नहीं रह गया रोग-शोक-भय-तम-भ्रम विषम अविद्याजन्य।
परानन्द-रवि उदित देख हट गये मोह-माया-पर्जन्य॥
नाचो, गाओ, मोद मनाओ, आज जगतके सारे लोग।
पाकर दिव्य 'भाव'-'रस'का अब मूर्तिमान मंगल-संयोग॥
हटे सभी, मिट जायेंगे सब भवके अमित भयानक रोग।
कर पायेंगे यदि इस मूर्त-युगलमें हम निज मनका योग॥
सुन्दरतम सौन्दर्य, मधुरतम शुचि माधुर्य नित्य साकार।
देख-निरख इनको भर लो नेत्रोंमें, मनमें कर सत्कार॥
देखो फिर भीतर-बाहर—सर्वत्र सदा इनको भर प्यार।
करते रहो सदा हर्षित मन राधा-माधव जय-जयकार॥

[६७]

गोकुल तैं गाजत बाजत जुबतिन के जूथ लिएँ,
नँदरानी फूलि-फूलि रावल में आईं।
सुनि-सुनि कैं चहुँ दिसि तैं नारी दौरीं देखन कौं,

सबै एकसार पाय परसन कौं धाईं ॥
पाछें बृषभान द्वार पौरी आय ठाड़े भए,
और बोलि जो बड़ेरी सनमुख पठाईं ।
देखत ही नँदरानी मनहीं मन मुसिक्यानी,
आदर दै पानि गहें, भवन माझ लाईं ॥
निकट जाइ लली देखि सबहिन मन अवरेखि,
अब भई साँची बात सुख-समूह ब्रज में ।
यह सुनि जन मोहन अँग-अँग आनंद भर्‌यौ,
गयौ जाय बृषभानजू पै लोटत पद-रज में ॥

[६८]

(राग देस—तीन ताल)

सुंदर सुभग कुँवरि एक जाई ।
कहा कहौं यह बात रूप गुन प्रेम कोटि भरि लाई ॥
भूलि गये जित-तित सब ब्रज में सुख की लहरि बढ़ाई ।
धनि लहनौ बृषभानु गोप कौ, भाग्य दसा चलि आई ॥
धनि आनंद जसोदारानी अपने भवनहिं लाई ।
बृंदाबन में सखि यह प्यारी भाग अधिक सुख पाई ॥

[६९]

(राग खमाच—ताल दादरा)

सुभ निसान बाजत बृषभान-भौन आज री ।
प्रगटी रूप-भरी कुँवरि साँवर-सुख साज री ॥
सुंदरिं सब गात चलीं, सरस मधुर गीत री ।
सजे सब मँगल-कलस, हिएँ भरी प्रीति री ॥
कहत एक—'ह्वैहैं बस याके नँदलाल री ।
दैहैं निज प्रियतम कौं परम सुख बिसाल री' ॥
'धन्य भाग्य हमरौ' एक कहत हँसि बाम री ।
'हमहू सुख दरस परस पैहैं अभिराम री' ॥

दधि-माखन भरे माट सीसन धरि गोप री।
आवत सब गोरस बरसावत अति ओप री॥
सिव, बिधि, सुरराज, सनक, नारदादि संत री।
आए सब गुप्त, करत कीरति हियवंत री॥

[७०]

(लावनी तर्ज—ताल कहरवा)

हरि प्रिय भामिनि, अग-जग-स्वामिनि, तन-दुति-दामिनि श्रीराधा।
त्रिभुवन-पावनि, सोक-नसावनि, हरनि सकल बिधि भव-बाधा॥
प्रगटी रससाने श्रीबरसानें, भानु-कीर्तिदा-घर सुघरी।
सब धन्य भए, सब भए प्रफुल्लित, मिटी बिथा सब की सगरी॥
श्रीरास-रसेस्वरि सुंदरता-मधुरता-ईश्वरी, हरि-प्यारी।
आए दरसन हित सिव, मुनि नारद, सनक आदि रिषि ब्रतधारी॥
सब भए कृतारथ कर दरसन-परसन मन सबके अनुरागे।
बृषभानु-कीर्तिदा की, बरसाने की जय-जयति करन लागे॥

[७१]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

आए मुनि भानु-भौन नारद बरसानें।
गावत हरिनाम मधुर पावन रस-साने॥
मिले बृषभान आय बोले मृदु बानी।
'हरिपुर तैं आए हम सुनि कैं, सुखदानी—॥
प्रगट भई कीरति-कूख कुँवरी श्रीराधा।
पूरन सब आस, हरन त्रास सकल बाधा॥
दरस करवाऔ हमैं कुँवरी के अबहीं।'
दीने पठाय भानु भीतर महल तबहीं॥
देखत ही भए मगन, तन-मन सब भूले।
महा आनंद-रस छायौ, हिए फूले॥
भाँति-भाँति करे स्तवन, फेरी तब दीनी।

चरन-रेनु कुँवरी की सिर चढ़ाय लीनी ।।
बाहिर आय बोले—'बृषभानू बड़भागी !
तुम पै दुरलभ अपार कुँवरि-कृपा जागी।
प्रगट भईं आय घर तुम्हरे जो स्वामिनि ।।
सच्चिदानंदमई ह्लादिनि हरि-भामिनि ।।'
मृदुल सुर बजाय बीन, मधुर-मधुर गावन।
लगे रस-भरे दृगन आँसू ढरकावन ।।
सरस रस-प्रमत्त फेर नृत्य करन लागे।
बोले—'मैं धन्य आज, भाग्य भव्य जागे ।।

[७२]

(राग कालिंगड़ा—तीन ताल)

ढाढ़िन नंदीसुर तें आई।
अपने पति कौं संग लिऐं है, अति आतुर उठि धाई ।।
उदै देखि ब्रज बल्लव-कुल कौ, फूली अँग न समाई।
नाचत-गावत प्रमुदित ह्वै कैं, टेरि असीस सुनाई ।।
महाभाग्य कीरति आदर दै भीतर भवन बुलाई।
कंचन बहु भूषन पाटंबर नख सिख तैं पहराई ।।
रतनभान रतनन की पोहोंची, ढाढ़िन हाथ गहाई।
उदैभान सोनेके टोडर देत बहुत सुख पाई ।।
दिये खता अगनित धानन के, ललितभान जु लुटाई।
अष्टभान अरु कुंतभानजू गोधन ठाठ बताई ।।
महाराज बृषभान बहुत करि मन की आस पुजाई।
दासकिसोरी कौं बाँह पकरि कैं बरसानें जो बसाई ।।

[७३]

(राग देस—तीन ताल)

महरि जू जाचन तुम पै आयौ।
देहु बधाई मनकी भाई, तिहूँ लोक जस छायौ ।।

कीर्ति-कूखि प्रगटी श्रीराधा सुनि-सुनि मंगल गायौ।
कृष्णदास ढाढ़ी अपने कौं बहुत भाँति पहरायौ ।।

[७४]

(राग गौरी—तीन ताल)

कीरति जू, दीजै मोहि बधाई।
कीरति-कूखि सिरोमनि प्रकटी, कीरति सब जग छाई ।।
नंदनँदन की जोरी प्रगटी श्रीराधा सुखदाई।
अब तौ मन कौ भायौ भयौ है, बिधना भली बनाई ।।
हौं ढाढ़ी नृप नंद महर कौ आयौ तुम पै धाई।
कृष्णदास पहरायौ बिधि करि, फूल्यौ अँग न समाई ।।

[७५]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

अब जो हरष भयौ रावल में, याकी तुलना कितहूँ नाहिं।
तुलना कितहूँ नाहिं, याकी समता कितहूँ नाहिं ।।
अब जो०

बहुत पुरानौ घर कौ ढाढ़ी, पके केस, यह लंबी दाढ़ी ।।
कुँअरि-जनम सुनि मुदिता बाढ़ी, धायो लै परिवार ।।
अब जो०

संग डोकरी आई चलकै, हरष भरी हिय नाचै-मुलकै।
बूढ़ी देह जवानी छलकै, छायो मोद अपार ।।
अब जो०

छोरा-छोरी, बहू-बहुरिया, गायँ असीसैं मधुर सुरैया।
लाख-लाख जुग जियौ कुँअरिया, मिलै स्याम भरतार ।।
अब जो०

आज मिलैंगे साल-दुसाला, हीरा-पन्ना, मुकता-माला।
सोनेके जेवर झलकाला, हाथ पाँव पुरवार ।।
अब जो०

भई आज सब की मनभाई, छोटे-मोटे लोग-लुगाई।
बगदैंगे तन खूब सजाई, लै रतनन के भार॥
अब जो०
जय-जय नृप बृषभानू दानी, जय उदार-मति कीरति रानी।
जय-जय अखिल बिस्व सुखदानी! मिलै मान सरकार॥
अब जो०

[७६]

(राग जैतश्री—ताल कहरवा)

नाचत-गावत ढाढ़िन के सँग ढाढ़ी हुरुक बजावै।
सात साखि बृषभान रायकी नंदराय माथो नावै॥
गोपिन लै सँग महरि जसोदा आपुनु मंगल गावै।
ब्रजबासी उपनंद मिले सब, घर-घर बात लुटावै॥
बरसाने में घर-घर कौतिक, मोतिन चौक पुरावै।
ह्वैहै सब मेरे मन भायौ, कुलदेवता मनावै॥
मनि-मुक्ता-रतननि भरि थारन ढाढ़ी-गोद भरावै।
झगा, पगा, उपरैना, टोडर ढाढ़ी कूँ पहरावै॥
देत असीस हाथ ऊँचे करि, ज्यौं सबहिन मन भावै।
सुता तिहारी, पूत नंद कौ, बिधना बात बनावै॥
ऐसी सुनियत, सब काहू के जाएँ जाचक आवै।
यह कन्या कुल-मंडन जोई ब्यास-बचन मोहि भावै॥

[७७]

(राग मारू—ताल कहरवा)

हौं ढाढ़िन ब्रजरानीजू की, कीरति जाचन आई।
भवन प्रकास करन कन्या बृषभान नृपति कें जाई॥
मम पति हरषे और देव सब, उर आनँद न समाई।
उमड़े सब जाचक त्रिभुवन के, सुनि यह सुजस बधाई।
कीजै मोहि अजाचक रानी! जाचन अनँत न जाई।
दीजै रतन, मनि, मानिक, मुक्ता, नग निरमोल मगाई॥

जो दीजै तौ सात साख कौ दोऊ बंस बखानौं ॥
नंदराय-बृषभान नृपति की कुल-परिपाटी जानौं ॥
बंस अहीर महा बहु नृप भये, कंजभान कौ गाऊँ।
भुवबल, चित्रसेन, अजमीढ़े, जस पर्जन्य सुनाऊँ ॥
बड़े भाग्य कुल-तिलक नंदजू जा कुल कीरति भाई।
तिहिं फल सुभग स्याम घन सुंदर मंगल मोद निकाई ॥
अब सुनि गोपबंस कुल रानी! सर्वोपरि रजधानी।
अष्ट सिद्धि नवनिधि जोरें कर, कमला-सी ललचानी ॥
भए रतिभानजु, सकलभान नृप, चित्रभान सुखदाई।
भान अष्टमे जोतभान बड़े, कंजभान बड़ राई ॥
बड़ौ बंस बरनन कौ, लघु मति कीरति जाति न जानी।
ता कुल श्रीबृषभान नृपति की कन्या ब्यास बखानी ॥

[७८]

(राग भैरव—तीन ताल)

जदुबंसी जिजमान, तिहारौ ढाढ़ी आयौ हो।
कुँवरि-जनम सुनि कै हौं आयौ, राखि हमारो मान ॥
एक बार हौं पहलें आयौ, देन बधाई ताकी।
नंदीसुर ब्रजराज-घरनि-घर, कूख सिरानी जाकी ॥
अब तौ मेरे मन कौ भायौ दोऊ नेग चुकावौ।
नँदरानी, कीरतिदे रानी ढाढ़िन कौं पहिरावौ ॥
बहुत भाँति ढाढ़िन पहिराई गोपराय बड़ दानी।
दासकिसोरी कौं निरभै करि कैं राख्यौ ब्रज ब्रजरानी ॥



सौभाग्य-वर्णन

[७९]

(राग आसावरी—तीन ताल)

धनि तेरी माता, जिनि तू जाई ॥
ब्रजनरेस बृषभानु धन्य, जिहिं नागरि कुँवरि खिलाई ।
धनि श्रीदामा भैया तेरौ, कहत छबीली बाई ॥
धनि बरसानौ हरिपुरहू तें जाकी बहुत बड़ाई ।
धन्य स्याम बड़भागी तेरौ नागर कुँवर सदाई ॥
धन्य कुंज सुखपुंजनि बरसत तामैं तू सुखदाई ।
धन्य पुहुमि, साखा-द्रुम-पल्लव जिनकी सेज बनाई ॥
धन्य कल्पतरु, बंसीबट धनि, बर बिहार रह्यौ छाई ।
धन्य जमुन, जाकौ जल निरमल अँचवत सदा अघाई ॥
धन्य रास की धरनी, जहँ तूँ रुचि कै सदा नचाई ।
धनि बंसीबट, जगत-प्रसंसी, राधा-नाम रटाई ॥
धन्य सखी ललितादिक, निसिदिन निरखत केलि सुहाई ।
धन्य अनन्य ब्यास की रसना, जेहिं रस-कीच मचाई ॥

[८०]

(राग भैरव—तीन ताल)

जयति जय श्रीबृषभानुदुलारी ॥
जयति कीर्तिदा जननी, जाई जिन गुन-खानि राधिका प्यारी ।
जय बृषभानु महीप-मुकुट-मनि, जिन घर जनमी जग-उजियारी ॥
कृष्णा, कृष्ण-जीवना, कृष्णाकर्षिनि कृष्ण-प्रान-आधारी ।
परम प्रेम प्रतिमा परिपूरन, प्रिय-सुख अति सुख माननिहारी ॥
प्रिय-सुख-समैं परम चतुरा नित, निज सुख समैं सुभोरी-भारी ।
प्रिय-सुख लागि बिसरि सब अग-जग, सहति समोद प्रसंसा-गारी ॥
टेक-बिबेक एक प्रियतम सौं, सबके सब संबंध निवारी ।
भजत-भजत भजनीय भई अब, तुम्हरौ भजन करत कंसारी ।

[८१]

(राग परज—तीन ताल)

धनि-धनि ब्रज बरसानौ गाम। जहाँ प्रगटी श्रीराधा नाम॥
जहाँ बसे राजा बृषभान। नंदराय के जीवन-प्रान॥
जाके घर कीरति श्रीरानी। ब्रज-बनिता की अति मनमानी॥
तिन कें उदर भई सुकुँवारी। सकल कला-गुन गति अति भारी॥
अति आनंद भयौ तिहिं काल। आइ जुरीं सब ब्रज की बाल॥
मंगल कलस बिराजत द्वार। गावति कर लै आईं थार॥
घर-घर बंदनवार बँधाई। सब मिलि आनँद करत बधाई॥
पंच सब्द बाजत हैं आँगन। बिप्र आदि आए सब माँगन॥
देत दान बृषभानु उदार। भूषन बसन अनूपम हार॥
छिरकत दूध दही अति रोरी। एक-एक काढ़ी रस बोरी॥
जानत नाहीं कछू मगन मन। भूषन-बसन-सँभार नहीं तन॥
सबै असीस देति मुख देखत। फिरि-फिरि श्रीराधा तन पेखत॥
चिरजीयौ अब ये सुकुँवारी। जाके दूलह श्रीगिरिधारी॥
नंद गोप के अति बड़ भाग। या कें राधा सौं अनुराग॥
इहि बिधि आनँद-सरिता बही। कुँवरि-कृपा तैं ते सब लही॥
बहुत भाँति यह लीला गाई। 'गोबिंद' तहाँ निछावर पाई॥

[८२]

(राग कालिंगड़ा—तीन ताल)

धन्य-धन्य द्वापर जुग, धनि यह भादौं की आठैं अति पावनि।
प्रगटे पहली में मोहन, या दूजी में राधा मनभावनि॥
उजियारौ पखवारौ, पावन भाग्यसील सुभ समय दुपहरी।
प्रगट भई राधा मनमोहन आनँदघन की आनँन-लहरी॥
पुन्य थली बरसानौ नगरी, भाग्यवान बृषभान सुनरपति।
कीरति रानी अति सुभागिनी, जिन में प्रगटी स्वयं स्याम-रति॥
भाग्यवान वे स्याम सलोने, जिन पाई यह दुर्लभ संपति।
हम सब भाग्यवान नर-नारी, भए धन्य करि तिनकी सुस्मृति॥



पलना-झूलन

[८३]

(राग बिलावल—तीन ताल)

अहो मेरी लाड़िली सुकुमारि पालनें झूलै।
मृदु मुसकानि निरखि नैननि सुख, कीरतिजू मन-ही-मन फूलैं ॥
कबहूँ चटकोरी चटकावति, झुंझन झुंझना छूलन झूलैं।
कबहुँक लेत उछंग भरि, अंतरगत की हरति है सूलैं ॥
श्रीबृषभानु गोद लै बैठे, मन-क्रम-बचन साधना तूलैं।
'सूरदास मदनमोहन' के अंतरनिधि की खानि सो खूलैं ॥

[८४]

(राग रामकली—तीन ताल)

लडैती पालनें झूलै।
रंगमहल रुचि रच्यौ बिधाता, निरखि-निरखि मन फूलै ॥
नव निधि सिधि जाकी आग्याकारी, (सो) जाई कीरति बाल।
सरस सरोवर भान-भवन में, प्रगटी है कुलपाल ॥
आज उदय सब ब्रजमंडल कौ, गोरी रसिक गोपाल।
कृष्नदास प्रभु अति आनंदे, जोरी परम रसाल ॥

[८५]

(राग पीलू—तीन ताल)

रसिकनी राधा पलना झूलैं। देखि-देखि गोपीजन फूलैं ॥
रतन जटित कौ पलना सोहै। निरखि-निरखि जननी-मन मोहै ॥
सोभा की सागर सुकुमारी। उमा-रमा-रति वारै डारी ॥
डोरी ऐंचत भौंह मरोरै। बार-बार कुँवरी तृन तोरै ॥
तिहिं छिन की सोभा कछु न्यारी। अखिल भुवनपति हाथ सवाँरी ॥
मुख पर अंबर वारति मैया। आनँद भयौ परमानँद भैया ॥

[८६]

(राग मारू—ताल कहरवा)

झूलौ-झूलौ राजकुमारि छबीली हो प्यारी।
श्रीकीरति प्रान अधार, छबीली हो प्यारी।
सब सुंदरता की सार छबीली हो प्यारी॥
नवल कनक कौ पालनौ, प्यारी! रतन-जटित जराइ।
गजमोतिन के झूमका, प्यारी! लटकत परम सुहाइ॥
आस पास झालर बनी, प्यारी! पीत जरी की कोर।
पँचरँग फोंदा पाट के, प्यारी! सोभित है चहुँ ओर॥
ऐसौ पलना, लाडिली प्यारी! तोकौं बनायौ सँवारि।
तुम झूलौ हौं झुलाउँ, हो प्यारी! अब किन छाँड़ौ आरि॥
कबहुँ किलक हँसि-हँसि उठै प्यारी! चितवत नैन बिसाल।
जननि-डीठ-डर जानि कै प्यारी! देत चखोड़ा भाल॥
जरतारी टोपी लसै, प्यारी! झगुली पीत सुदेस।
कँठ बघना कर पहोंचियाँ, प्यारी! सोभित सुंदर बेस॥
माखन-मिश्री देउँगी, प्यारी! घुटरुन चलौ सुहाइ।
तेरे चरन रुन-झुन करैं, प्यारी! षटपद सुनत लजाइ॥
वह दिन कैसौ होयगौ, प्यारी तुतरे बैन बुलाइ।
मैया कहि टेरै तबै, प्यारी! सरबस देउँ लुटाइ॥
मैया मनोरथ यौं करै, प्यारी! जाकौ (श्री) कीरति नाउँ।
दीजै यह फल रसिक कौं, प्यारी! श्रीबल्लभ गुन गाउँ॥

[८७]

(राग भैरव—तीन ताल)

कीरति रानी पालनें झुलावै।
रतन जटित कौ पलना बन्यौ है, मोतिन माल गुँथावै॥
बिबिध भाँति पाट की डोरी, हीरा बहुत जरावै।
गज-मोतिन के बने झूमका, पचरँग चीर बिछावै॥
नंदीसुर ते जसुमति रानी, मंगल गावत आवै।
सब सखियन मिलि पलना झुलावै, गरीबदास, गुन गावै॥



श्रीराधा-स्तवन

[८८]

नवनीत-गुलाब तैं कोमल हैं, 'हठी' कंज की मंजुलता इन में।
गुललाला गुलाल प्रबाल जपा छबि, ऐसी न देखी ललाइन में॥
मुनि-मानस-मंदिर मध्य बसैं, बस होत हैं सूधे सुभाइन में।
रहु रे मन, तू चित-चाइन सौं, बृषभानु-कुमारिके पाइन में॥

[८९]

कोऊ उमाराज, रमाराज, जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचंद सुखकंद नाम नाधे में।
कोऊ ध्यावै गनपति, फनपति, सुरपति कोऊ,
कोऊ देव ध्याय फल लेत पल आधे में॥
'हठी' की अधार निराधार की अधार तू ही,
जप-तप, जोग-जग्य—कछुवै न साधे मैं।
कटैं कोटि बाधे, मुनि धरत समाधे, ऐसे
राधे पद रावरे सदा ही अवराधे मैं॥

[९०]

काहू कौं सरन संभु-गिरिजा, गनेस-सेस,
काहू कौं सरन है कुबेर-ऐसे धोरी कौ।
काहू कौं सरन मच्छ-कच्छ, बलराम-राम,
काहू कौं सरन गोरी-साँवरी-सी जोरी कौ॥
काहू कौं सरन बोध, बामन, बराह, ब्यास,
एही निराधार सदा रहै मति मोरी कौ।
आनँद करन बिधि-बंदित चरन एक,
'हठी' को सरन बृषभानु की किसोरी कौ॥

[९१]

कोऊ धन, धाम कोऊ चाहै अभिराम, कोऊ
साहिबी सुरेस भाँति लाख लहियतु है।
कोऊ गजराज, महाराज, सुखराज कोऊ,
तीरथ-बरत-नेम अंग दहियतु है॥
ऐसो चित चाहै, चरचा है दुनिया की 'हठी',
चाहै हदै एक तौन ठीक ठहियतु है।
जन रखवारी की सु प्रभु-प्रान प्यारी की,
सुकीरति-दुलारी की नजर चहियतु है॥

[९२]

हीन हौं, अधीन हौं, तिहारो ब्रज-साहिबनी !
हिय में मलीन, करुना की कोर ढरिए।
भारी भवसागर तें बूड़त बचावौ मोहि,
काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरिए॥
बुरौ-भलौ जैसौ, तेरे द्वार पर्यौ हौं तौ,
मेरे गुन-औगुन तू मन में न धरिए।
कीरति-किसोरी, बृषभानु की दुहाई तोहि,
लच्छ-लच्छ भाँति सौं 'हठी' कौ पच्छ करिए॥

[९३]

जन-दुख-हरनी, धरनी-पति ध्यावैं तोहि,
तेरी जग करनी बिधि बरनी बड़े थान की।
चिंता कैसौ घेरा मन ढेरा-सौ भ्रमत फिरै,
हदै नहिं डेरा, सुधि खान की न पान की॥
ध्यावत बनै न मोहिं, तेरोई कहावत हौं,
'हठी' पै कृपा की कोर राखि दया-दान की॥
औगुननि भरौ हौं कहत कर जोरि अब,
मेरौ पच्छ करि तू किसोरी बृषभानु की॥

[९४]

जाकी कृपा सुक ग्यानी भए, अतिदानी औ ध्यानी भए त्रिपुरारी।
जाकी कृपा बिधि बेद रचे, भए ब्यास पुरानन के अधिकारी॥
जाकी कृपा तें त्रिलोकी-धनी सु कहावत श्रीब्रजचंद बिहारी।
लोक-घटी तें 'हठी' को बचाउ, कृपा करि श्रीबृषभानु-दुलारी॥

[९५]

चंद-सौ आनन, कंचन-सौ तन,हौं लखि कैं बिन-मोल बिकानी।
औ अरबिंद-सी आँखिन कौं 'हठी' देखत मेरियै आँखि सिरानी॥
राजति है मनमोहन के सँग, वारौं मैं कोटि रमा, रति, बानी।
जीवनमूरि सबै ब्रज की, ठकुरानी हमारी है राधिका रानी॥

[९६]

चामीकर-चौकी पर चंपक-बरन 'हठी',
अंग जु चमकैं चारु चंचला चलावतीं।
तारा-सी तरंगना-सी अतर लगावै रति,
मुकुर दिखावै बिजै बीजन डुलावतीं॥
कमला करनि जोरै, बिमला सुतृन तोरै,
नवला लै मरजी कौं अरजी सुनावतीं।
सुरन की रानी, सुरपालन की रानी,
दिग्पालन की रानीं द्वार मुजरा न पावतीं॥

[९७]

फटिक सिलान के महल महरानी बैठी,
सुरन की रानीं जुरि आईं मन-भावतीं।
कोऊ जलदानी, पानदानी, पीकदानी लिऐं,
कोऊ कर बीनै लै सुहाए गीत गावतीं॥
कोऊ चौंर ढारैं चारु चाँदनी-से चौजवारे,
'हठी' लै सुगंधन सौं अलकें बनावतीं।
मोतिन के, मनिन के, पन्नन के, प्रबालन के,
लालन के, हीरन के हार पहिनावतीं॥

[९८]

चंद की कला-सी, नवला-सी सखी संग वारौं,
रंभा, रमा, उमा, 'हठी' उपमा कौं को रही?
कीरति-किसोरी, बृषभानु की दुलारी राधा,
आली ! वनमाली कौ सहज चित चोरही ॥
भौंन तें निकसि प्यारी पाय धारे वाहिर लौं,
लाली तरवान की उमड़ि इक ओर ही।
बगर-बगर अरु डगर-डगर बर,
जगर-मगर चारयो ओर दुति हो रही ॥

[९९]

चाँदनी के आँगन, बिछौना नीके चाँदनी के,
चाँदनी-सी दुति, अँखियान सुख लह्यौ है।
चाँदनी-सौ चीर चारु, चाँदनी के आभूषन,
चंपक के गातन बखानौ जाकौ कह्यौ है ॥
'हठी' आस-पास बैठीं सुघर-सुजान सखीं,
जिन्हें देखि रति कौ गुमान जात बह्यौ है।
राधे मुखचंद की निकाई ब्रजचंद आज,
अवनि-अकास लौं प्रकास फैलि रह्यौ है ॥

[१००]

कंचन-महल-चौक, चाँदनी बिछौना तामें,
जरी कौ बितान-तान भान-जोति मंद की।
लालन की मालै, लाल सारी कोरदार अंग,
औठन की लाली जिमि लाली जीवबंद की ॥
रंभा-सी, रमा-सी जहाँ दासीं मैंनका-सी 'हठी',
ठाढ़ी कर जोरैं तेऊ, छीनैं जोति चंद की।
गावै बेद-बानी, चौंर ढारति भवानी, राधे
बैठी सुखदानी महारानी नंद-नंद की ॥

[१०१]

चंदन लिपायौ चौक, चाँदनी-चंदोवे तामें,
चाँदनी-बिछौनाँ फैली लहर सुगंद की।
चाँदनी की साज नीकी चंद-सम चमकन,
चारचौ ओर चंदमुखी चंद-जोति मंद की।।
चाँदनी-सो चार चारु चाँदनी-सी फैली 'हठी',
चाँदनी-सी हाँसी, कै मिठाई सुधा-कंद की।
चंदन की चौकी बैठी चंदन लगाय भाल,
चंद-से बदन राधे रानी ब्रजचंद की।।

[१०२]

ध्यावत महेसहू, गनेसहू, धनेसहू,
दिनेसहू, फनेस त्यो मुनेस मन मानी हैं।
तीनौं लोक जपत, त्रिताप की हरनहारि,
नवों निद्धि, सिद्धि, मुक्ति भईं दरबानी हैं।।
कीरति-दुलारी सेवैं चरन बिहारी धन्य,
जाकी कित्त नित्त बिधि बेदन बखानी है।
साधा काज पल में, अराधा छिन आधा 'हठी'
बाधा हरिबे कौं एक राधा महारानी हैं।।

[१०३]

बैठी रंग भरी है रँगीली रंग रावटी में,
कहाँ लौं बखानौं सुंदराई सिरताज की
चाँदनी की, चंपक की, चंचला-चमीकर की,
इंदुमा, तिलोतमा की शोभा कौन काज की।।
मोतिन के हार गरें, मोतिन सौं माँग भरें,
मोतिन सौं बेनि गुही 'हठी' सुखसाज की।
चाल गजराज, मृगराज की-सी लंक, दुज-
राज-सौ बदन राजै रानी ब्रजराज की।।

[१०४]

बड़ौ ही प्रताप, बड़ौ ही सुहाग, बड़ौ ही प्रभाव सुभाविक राखै ।
बड़ी गुन-मान, बड़ीयै भुजान, सरूप-निधान पुरानन भाखै ।।
बड़े-बड़े देव-दिबेसन की घरनीं मुख देखन कौं अभिलाषैं ।
बड़ी दिलदार, बड़े-बड़े हार, बड़े-बड़े बार, बड़ी-बड़ी आँखैं ।।

[१०५]

रंभा-रमा-सी, उमा-सी, 'हठी' बिमला नवला रति रूप छली सी ।
चाँदनी-चंपा-चमीकर-सी चपला चमकावत जात चली सी ।।
भागन आज लखी भरि नैनन, रावरी आवत देखि भली-सी ।
जात चली गलि भानुलली अलि ! मंजुल कोमल कंज-कली-सी ।।

[१०६]

मोरपखा, गर गुंज की माल, किएँ नव भेष, बड़ी छबि छाई ।
पीतपटी-दुपटी कटि में, लपटी लकुटी 'हठी' मो मन भाई ।।
छूटी लटैं, डुलैं कुंडल कान, बजै मुरली-धुनि मंद सुहाई ।
कोटिन काम गुलाम भए, जब कान्ह ह्वै भानु-लली बनि आई ।।

[१०७]

(दोहा)

कृष्णमना, श्रीकृष्ण-मति, कृष्णजीवना शुद्ध ।
कृष्णेन्द्रिया, सुचारु शुभ, कृष्णप्रिया विशुद्ध ।।
कृष्ण-कथा मुखमें सदा, कृष्ण-नाम-गुण-गान ।
कृष्ण-सुभाषण-श्रवण शुचि, कृष्ण-गुण निरत कान ।।
कृष्ण-रूप-मधु नेत्रमें नासा कृष्ण-सुगन्ध ।
कृष्ण-सुधा-रस-रसमयी रसना नित निर्बन्ध ।।
कृष्ण-स्पर्श संलग्न नित अंग बिना व्यवधान ।
कृष्ण-मधुर रस कर रहा मन अतृप्त नित पान ।।
नित्य कराती श्यामको मधुर अमिय-रस पान ।
नित्य पूर्ण करती सभी श्याम काम, रख ध्यान ।।
श्याम-प्रेम शुचि रत्नकी अमित मनोहर खान ।

श्याम सुखकरण गुण अमित अनुपम नित्य निधान ॥
भीतर-बाहर पूर्ण नित सुन्दर श्याम सुजान ।
दीख रहा सब श्याममय, नित नव मधुर महान ॥
विश्वविमोहन श्यामकी मनमोहनि, रसधाम ।
श्याम-चित्त-उन्मादिनी श्यामा दिव्य ललाम ॥

[१०८]

(राग सूहा—तीन ताल)

हरत मन माधव कंचन-गोरी ॥
राधा अनियारे-रतनारे लोचन सौं, कछु भौंह मरोरी ।
पग पैंजनि, दोउ चरन महावर, करधनि-धुनि मनु मधु रस-घोरी ॥
दरपन कर सोहत, मुकता-मनि-हार हृदै, मृदु हँसनि ठगोरी ।
नयननि बर अंजन मन-रंजन, चित्त-बित्त-हर नित बरजोरी ॥
नील बसन, सरदिंदु-बदन-दुति, बेंदी सेंदुर-केसर-रोरी ।
सहज मथत मन्मथ-मन्मथ-मन दिव्य छटा बृषभानुकिसोरी ॥

[१०९]

(राग झँझोटी—ताल दादरा)

जय जय हरि-हृदया वृषभानु-सुकुमारी ॥
बिजुरि बरन गौर बदन, सोहत तन नील बसन,
बिंब अधर मधुर हँसन, माधव-मन-हारी ।
सुषमामय अंग-अंग, लिये मधुर सखिन संग,
बिहरत भरि मन उमंग प्रियतम-सुखकारी ॥
लोक-बेद-लाज त्यागि, त्यागि स्वजन महाभाग,
हरि हित गावत बिहाग, डोलत मतवारी ।
प्रियतम-सुख-जल-सुमीन, निज-सुख-बांछा-बिहीन,
गुननिधि, पै बनी दीन, राधिका दुलारी ॥

श्रीराधा-माधव-प्रीति-सम्बन्धी स्फुट पद

[११०]

(रसिया तर्ज—ताल कहरवा)

प्रेम जो प्रगट्यौ ब्रज के बीच,
सो तो दुर्लभ है जग मायँ, सो तो अतुलनीय जग मायँ,
सो तो तीन लोक में नायँ, सो तो सप्त द्वीप में नायँ ॥
राधा महाभाव की मूरति, माधव रसिक-सिरोमनि रसपति,
इन की त्यागमयी उज्ज्वल रति, निगम न पायौ पार ॥
निजसुख वाञ्छा के सुचि त्यागी, एक दूसरे के अनुरागी,
भोग-मोच्छ के सहज बिरागी, महिमा अपरंपार ॥
एक दूसरे कौं सुख देवैं, निज सुख नहिं चाहैं नहिं लेवैं,
प्रियसुख लागि त्याग कौं सेवैं, अहंकार कर छार ॥
प्रेम प्राप्त करिबौ जो चाहै, भर लै हिय में अमित उमाहैं,
सुख-दुख में न हँसै न कराहै, हो पूरौ तैयार ॥
गोपीजन के त्याग-भाव कौं, प्रियतम-सुख के एक चाव कौं,
सकल बासना के अभाव कौं करैं समुद स्वीकार ॥
जीवैं-मरैं प्रेम के खातर, भोग-त्याग दोउन कौं तजकर,
प्रियतम के इच्छामय बनकर, रहैं नित्य अबिकार ॥

[१११]

(राग भीमपलासी—ताल कहरवा)

जय जय जय राधा अभिराम।
जय जय जय माधव गुणधाम ॥
जय जय पावन नन्दग्राम।
जय बरसाना पूरणकाम ॥
जय नँदबाबा, नृप बृषभान।
जय मनसुख, मधु सखा सुजान ॥

जय कीर्तिदा मूर्ति अनुराग ।
जयति यशोदा मा बड़भाग ।।
जय गोपीजन कायव्यूह ।
जय सखिगण मंजरी समूह ।।
जय रासेश्वरि रूप ललाम ।
जय रसिकेन्द्रशिरोमणि श्याम ।।
जय जय निभृत निकुञ्ज सुरम्य ।
जय लीला मन-बुद्धि-अगम्य ।।

[११२]

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

छबि छाई छबीली बृन्दाबन में। आज खेलैं अकेले कहुँ कुंजन में ।।
त्रिबिध समीर पुलिन तीर चलि रही कैसी ।
तरनि-तनया-तरंग संग बहि रही कैसी ।।
गीत कल कंठ सौं कोयल कहि रही कैसी ।
मत्त मयूर नृत्य-बृत्य लै रही कैसी ।।
राधे रानी ! पधारौ आज कुंजन में ।। छबि० ।।
कुँवरि किसोरी भोरी भानु की दुलारी तू ।
रवनि, रासेस्वरी, प्रान-धन हमारी तू ।।
तोय राखौं सदा इन नैनन में ।। छबि० ।।
सुमन सुगंध कुंद मंद-मंद महकाई ।
पवन-झकोर डार फूल-भार लहराई ।।
मानौ ठाड़ी बुलावै तुम्हें सैनन में ।। छबि० ।।
आज रस रास सुख लूटि सखी हरषैंगी ।
रूप की रासि राधे देखि रंग बरषैंगी ।।
मीठी तान सुनाय मृदु बैनन में ।। छबि० ।।

(११३)

(राग भैरवी—ताल कहरवा)

चलौ, चलौ री किसोरी बृंदाबन में।
कैसी छाई हरियाली आज कुंजन में॥
सीतल मंद सुगंध जुत चलि रहि त्रिबिध समीर।
तुमहु पधारौ, रास करि हरिऐ जन-मन-पीर॥
प्रेमबावरे बने री तेरे दरसन में॥ चलौ०॥
चमकि चंद की चाँदनी मो मन रही लुभाय।
मति देखौ या चंद कौं, देय न दीठि लगाय॥
आज दियौ ना डिठौना गोरे आनन में॥ चलौ०॥
सुक-पिक-खंजन द्रुमन चढ़ि चहकि रहे हरषाय।
मनहुँ रास-रस निरखिबे प्रेमी रहे तुराय॥
प्रेम बावरे बनेंगे तेरे दरसन में॥ चलौ०॥
तुम भोरे, अति सरल चित, ये ब्रजतिय सब ढीठ।
तबही तौ नित मान करि दै बैठत हौ पीठ॥
नित कैसैं मनाऊँ परि चरनन में॥ चलौ०॥
करन लगे फिरि अचगरी, बोलत कुटिल सुभाय।
तेरी कुटिल कटाच्छ लखि को न जाय बोराय॥
कैसो भैरयौ है मिठास इन बैनन में॥ चलौ०॥
ये पपिहा पिउ-पिउ रटत, मो मन करत उदास।
ह्वै अधीन मागत मनो बृंदाबन कौ बास॥
कब परैगी पुकार तेरे स्रवनन में॥ चलौ०॥
मोहि लजावत बृथा हरि! तुम रस प्रेमी भृंग।
'स्याम' करत बिनती रहै, अनुदिन राखौ संग॥
मेरौ जनम सुफल पग-परसन में ॥ चलौ०॥

[११४]

(तर्ज रसिया—तीन ताल)

रटे जा राधे-राधे, जपे जा राधे-राधे ।
प्यारे ब्रजराजकुमार, भजे जा राधे-राधे ॥ टेक ॥
या ब्रजकी महिमा भारी, नहिं जानै अज-त्रिपुरारी ।
जहँ प्रगटे नंदकुमार, रटे जा राधे-राधे ॥ १ ॥
जहँ रोहिनि-जसुमति मैया, दाऊ-से नेही भैया ।
नँदबाबा करै दुलार, भजे जा राधे-राधे ॥ २ ॥
जहँ अगनित सखा पियारे, खेलैं रँग न्यारे-न्यारे ।
गैयन के झुंड अपार, जपे जा राधे-राधे ॥ ३ ॥
अति नगर सुघर बरसानौ, माँ कीरति, पितु बृषभानौ ।
प्रगटी राधा सुखसार, रटे जा राधे-राधे ॥ ४ ॥
आनँदघनरासी राधे, राधे बिन मोहन आधे ।
राधा ही जीवन-सार, भजे जा राधे-राधे ॥ ५ ॥
है राधा माधव-आत्मा, राधा-बल हरि सर्वात्मा ।
है महाशक्ति अनिवार, जपे जा राधे-राधे ॥ ६ ॥
है महाभावमयि राधा, प्रेमानँद-उदधि अगाधा ।
राधा सँग नित्य बिहार, रटे जा राधे-राधे ॥ ७ ॥
जग-रागरहित, अति रागी, गोपीजन अति बड़भागी ।
जिन पायौ प्रभु कौ प्यार, भजे जा राधे-राधे ॥ ८ ॥
गोपिन महँ सब सिरमौर, मुनि-मन-हरकी चित-चोर ।
राधा की हूँ बलिहार, जपे जा राधे-राधे ॥ ९ ॥
राधा की रसमयि लीला, कोउ समुझै रसिक हठीला ।
जाकौ बेद न पायौ पार, रटे जा राधे-राधे ॥ १० ॥

[११५]

(राग बिलावल—ताल दादरा)

या दधि कौ कान्हा दान न पैहौ ।
सँग की सखीं सब आगे निकसि गईं
मोते अकेली ते का लै पैहो ॥ या दधि कौ० ॥
अंबर बेचौ पीतांबर बेचों
मुरली के सँग कान्हा खुद बिक जैहौ ॥ या दधि कौ० ॥
जो मेरी मटुकी पै हाथ लगैहौ,
तो माँग भरे मोती गिर जैहें
इक मोती के मोल में कान्हा !
नंद जसोदा के सँग बिक जैहौ ॥ या दधि कौ० ॥

[११६]

(राग बिलास टोड़ी—तीन ताल)

कृपा जो राधाजू की चहियै ।
तौ राधाबर की सेवा में तन-मन सदा उमहियै ॥
माधव की सुख-मूल राधिका, तिन के अनुगत रहियै ।
तिन के सुख-संपादन कौ पथ सूधौ अबिरत गहियै ॥
राधा-पद-सरोज-सेवा में चित निज नित अरुझइयै ।
या बिधि स्याम-सुखद राधा-सेवा सौं स्याम रिझइयै ॥
रीझत स्याम राधिका रानी की अनुकंपा पइयै ।
निभृत निकुंज जुगल सेवा कौ सरस सुअवसर लहियै ॥



श्रीराधाकुमारीकी आरती

(राग बहार—तीन ताल)

आरति श्रीबृषभानुसुता की ।
मंजु मूर्ति मोहन-ममताकी ॥ टेक ॥
त्रिविध तापयुत संसृति-नाशिनि,
विमल विवेक विराग विकासिनि,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दर-तम छबि सुन्दरताकी ॥ १ ॥
मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरल प्रेम-अमिय-रस दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी ॥ २ ॥
संतत सेव्य संत-मुनि-जनकी,
आकर अमित दिव्य गुन-गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण-तन-मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी ॥ ३ ॥
कृष्णात्मिका, कृष्ण-सहचारिणि,
चिन्मय वृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगज्जननि जग-दुःख-निवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी ॥ ४ ॥



भगवान् श्रीकृष्ण और उनकी स्वरूपाशक्ति श्रीराधिकाजीके स्वरूपका यथार्थ ज्ञान उन्हींको है। दूसरा कोई भी यह नहीं कह सकता कि इनका स्वरूप ऐसा ही है। जो कुछ भी वर्णन होता है, वह स्थूल रूपका और आंशिक ही होता है। भगवान् श्रीकृष्ण समग्र ब्रह्म या पुरुषोत्तम हैं। ब्रह्म, परमात्मा, आत्मा—सब इन्हींके विभिन्न लीला-स्वरूप हैं। श्रीराधाजी इन्हींकी स्वरूपाशक्ति हैं। श्रीराधाजी और श्रीकृष्ण सर्वथा अभिन्न हैं। भगवान् श्रीकृष्ण दिव्य चिन्मय आनन्द विग्रह हैं और श्रीराधाजी दिव्य चिन्मय प्रेम विग्रह हैं। वे रसराज हैं, ये महाभाव हैं। भगवान्‌की इन्हीं स्वरूपाशक्तिसे अनन्य कोटि शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, जो जगत्‌का सृजन, पालन और संहार करती हैं। भगवान्‌ने स्वयं कहा है—जो नराधम हम दोनोंमें भेदबुद्धि करता है वह चन्द्र-सूर्यकी स्थिति-कालतक कालसूत्र नामक नरकमें रहता है।

जब युगल सरकार कृपा करके अपने दुर्लभ दर्शन देना चाहें तभी दर्शन हो सकते हैं। उनकी कृपा ही उनके साक्षात्कारका उपाय है।

(श्रीराधा-माधव-चिन्तन नामक पुस्तकसे)

१६ सितम्बर—निश्चल भावसे विश्वासके साथ मनको आज्ञा दो—रे मन तू मेरा सेवक है। मेरी सत्ता और चेतनासे तेरा जीवन है। तू मेरी एक स्वीकृतिमात्र है। मेरी आज्ञा मान और जैसे मैं चाहूँ वैसे रह। इधर-उधर किया तो मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा।

(दैनिक कल्याण-सूत्र नामक पुस्तकसे)

धर्महीन मनुष्यको शास्त्रकारोंने पशु बतलाया है। जो संसारके समस्त जीवोंके कल्याणका कारण हो, उसे ही धर्म समझना चाहिये। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय (चोरी न करना), शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य और अक्रोध--ये दस धर्मके लक्षण हैं।

चोरी अनेक प्रकारसे होती है, किसीकी वस्तुको उठा लेना, वाणीसे छिपाना, बोलकर चोरी करवाना, मनसे परायी वस्तुको ताकना आदि सब चोरीके ही रूप हैं। समाजकी प्रगति चोरीकी ओर बड़े वेगसे बढ़ रही है।

(**मानव-धर्म** नामक पुस्तकसे)

साधनमें एक विघ्न है परदोष-दर्शन। साधकको इस बातसे कुछ भी प्रयोजन नहीं रखना चाहिये कि 'दूसरे क्या करते हैं।' साधकको अपनी साधनाके कार्यसे इतनी फुरसत ही नहीं मिलनी चाहिये जिससे वह दूसरेका एक दोष भी देख सके। जिन लोगोंमें दूसरोंके दोष देखनेकी आदत पड़ जाती है वे साधन-पथपर स्थिर रहकर आगे नहीं बढ़ सकते। जब दोष दीखते ही नहीं तब उनकी आलोचना करनेकी तो कोई बात ही नहीं रह जाती। दोष अपने देखने चाहिये।

(**साधन-पथ** नामक पुस्तकसे)

अपने मनके विरुद्ध शब्द सुनते ही किसीकी नीयतपर सन्देह करना उचित नहीं।····अगर आप दूसरेको चुपचाप बैठाकर अपनी बात सुनाना और समझाना पसंद करते हैं तो इसी तरह उसकी बात सुननेके लिये आपको भी तैयार रहना चाहिये।

(**आनन्दकी लहरें** नामक पुस्तकसे)

'मनोरञ्जन' का प्रश्न इस समय बहुत महत्त्वका हो गया है। घर-द्वार फूँककर, धर्म-कर्म खोकर, शील-संकोच और लज्जा-मर्यादाका नाश करके भी 'मनोरञ्जन' करना है। 'मनोरञ्जन' का इस प्रकारका यह महारोग बहुत नवीन है, पर यह बहुत ही व्यापक हो गया है।……सिनेमासे लोगोंने चोरीकी नयी-नयी कलाएँ सीखीं, डाके डालने सीखे, शराब पीना सीखा, निर्लज्जता सीखी और भीषण व्यभिचार सीखा, फिर भी हम इसे 'मनोरञ्जन' ही मानते हैं।

(**सिनेमा—मनोरञ्जन या विनाशका साधन** नामक पुस्तकसे)

जिस प्रकार स्त्रियोंका जेलकी कालकोठरीकी तरह बंद रहना उसके लिये हानिकर है, उसी प्रकार—वह उससे भी बढ़कर हानिकर उनका स्त्रियोचित लज्जाको छोड़कर पुरुषोंके साथ निरंकुशरूपसे घूमना-फिरना, पार्टियोंमें शामिल होना, पर-पुरुषोंसे निःसंकोच मिलना, सिनेमा तथा गंदे खेल-तमाशोंमें जाना, पर-पुरुषोंके साथ खान-पान तथा नृत्यगीतादि करना आदि है। नारीके पास सबसे मूल्यवान् और आदरणीय सम्पत्ति है उसका सतीत्व। सतीत्वकी रक्षा ही उसके जीवनका सर्वोच्च ध्येय है।

(**नारी-शिक्षा** नामक पुस्तकसे)

गोपी-प्रेममें रागका अभाव नहीं है, परन्तु वह राग सब जगहसे सिमट कर, भुक्ति और मुक्तिके दुर्गम प्रलोभन व पर्वतोंको लाँघकर केवल श्रीकृष्णमें अर्पण हो गया है। इहलोक और परलोकमें गोपियाँ श्रीकृष्णके सिवा अन्य किसीको भी नहीं जानतीं।

(**गोपी-प्रेम** नामक पुस्तकसे)

मनुष्य-जीवनका एकमात्र साध्य या लक्ष्य मोक्ष, भगवत्प्राप्ति या भगवत्प्रेमकी प्राप्ति ही है, यह दृढ़ निश्चय करके प्रत्येक विचार तथा कार्य इसी लक्ष्यको ध्यानमें रखकर इसीकी सिद्धिके लिये करें।

किसीका भी बुरा न चाहे, बुरा होता देखकर प्रसन्न न हों।

किसीकी निन्दा-चुगली न करें। यथाशक्ति पर-चर्चा करें ही नहीं। किसीकी भी व्यर्थ आलोचना न करें। झूठ न बोलें।

किसी प्राणीकी हिंसा न करें। अपना काम अपने हाथसे करें।

भगवान्‌के नामका जप अधिक-से-अधिक करें। कम-से-कम २१,६०० नाप-जप जरूर कर लें।

कुछ-न-कुछ प्रतिदिन दान करें। दान सम्मानपूर्वक करें।

किसीकी जूठन कभी न खायें-पीयें। जूठा हाथ जरूर धो लें।

पति-पत्नी एक-दूसरेको पूरक तथा एक-दूसरेका अर्धाङ्ग समझें।

(कल्याणकारी आचरण नामक पुस्तकसे)



गीताप्रेसकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५, फोन (०५५१) ३३४७२१; फैक्स (०५५१) ३३६९९७

१. कलकत्ता-	गोबिन्दभवन-कार्यालय	© (०३३) २३८६८९४	
पिन-७००००७	१५१, महात्मा गाँधी रोड	फैक्स (०३३) २३८०२५१	
२. दिल्ली-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०११) ३२६९६७८	
पिन-११०००६	२६०९, नयी सड़क	फैक्स (०११) ३२५९१४०	
३. पटना-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०६१२) ६६२८७९	
पिन-८००००४	अशोकराजपथ, बड़े अस्पतालके सदर फाटकके सामने		
४. कानपुर-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०५१२) ३५२३५१	
पिन-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	फैक्स (०५१२) ३५२३५१	
५. वाराणसी-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०५४२) ३५३५५१	
पिन-२२१००१	५९/९, नीचीबाग		
६. हरिद्वार-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०१३३) ४२२६५७	
पिन-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार		
७. सूरत-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०२६१)	३२३७३६२,
पिन-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने; भटार रोड		३२३८०६५
८. चूरू-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०१५६२) ५२६७४	
पिन-३३१००१	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क	फुटकर बिक्री-केन्द्र	
९. ऋषिकेश-	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम;	© (०१३५) ४३०१२२	
पिन-२४९३०४	(मुनिकी रेती, ऋषिकेशमें भी फुटकर बिक्री-केन्द्र)		
१०. कटक-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;		
पिन-७५३०१२	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी		
११. इन्दौर-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	© (०७३१) ५२६५१६	
पिन-४५२००१	जी० ५ श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग		
१२. हैदराबाद-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;		
पिन-५०००९६	दूकान नं० ६, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार		

स्टेशन-स्टाल [प्लेटफार्म नं० (कोष्ठ) में]

दिल्ली जंक्शन (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० ८-९); हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); कोटा [राजस्थान] (नं० १); बीकानेर (नं० १); गोरखपुर [उ० प्र०] (नं० १); कानपुर (नं० १); लखनऊ [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० ४-५); मुगलसराय जं० (नं० ३-४); हरिद्वार (नं० १); पटना जंक्शन (मुख्य प्रवेशद्वार); धनबाद (नं० २-३); मुजफ्फरपुर (नं० १); हावड़ा स्टेशन (नं० ८ तथा १८ दोनोंपर); सियालदा मेन (नं० ८); आसनसोल (नं० ५); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० १); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० १); गुवाहाटी जं० (मुसाफिरखाना) एवं अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली।

visit us at: www.gitapress.org | e-mail:gitapres@ndf.vsnl.net.in